राष्ट्रीय छात्रशक्ति

वर्ष 34 अंक 8 अक्तूबर 2012 नई दिल्ली मूल्य 5 रु. पृष्ठ 28

भ्रष्ट यूपीए सरकार के विरोध में देशव्यापी कॉलेज बंद

मेंगलूर (कर्नाटक) में कॉलेज बन्द के दौरान रास्ता रोको करते छात्र

गुजरात में कॉलेज बंद करते कार्यकर्त्ता

जलंधर (पंजाब) में कॉलेज बंद के दौरान बाईक रैली निकालते कार्यकर्त्ता

राष्ट्रीय छात्रशक्ति

शिक्षा क्षेत्र की प्रतिनिधि पत्रिका

संपादक

आशुतोष

संपादक मण्डल

अवनीश सिंह
संजीव कुमार सिन्हा

फोन : 011-43098248
ई-मेल : chhatrashakti.abvp@gmail.com
ब्लॉग : chhatrashakti.abvp.blogspot.com
वेबसाईट : www.abvp.org

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के लिए राजकुमार शर्मा द्वारा बी-50, विद्यार्थी सदन, क्रिश्चियन कॉलोनी, निकट पटेल चेस्ट इंस्टीट्यूट, दिल्ली-110007 से प्रकाशित एवं मॉडर्न प्रिन्टर्स, के-30, नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032 द्वारा मुद्रित।

संपादकीय कार्यालय

"छात्रशक्ति भवन"
690, भूतल, गली नं 21,
फैज रोड, करोलबाग,
नई दिल्ली-110005.

अनुक्रमणिका

संपादकीय	4
केंद्र सरकार के घोटालों के खिलाफ देशभर में महाविद्यालय बंद एवं रास्ता रोको आन्दोलन	5
प्रफुल्ल पटेल के खिलाफ विरोध प्रदर्शन	7
जेएनयू में 'बीफ फेस्टीवल' (डॉ. शिव शक्ति बक्सी)	9
गिलगित-बाल्तिस्तान में पाकिस्तान का नया दांव (आशुतोष)	11
छात्र संघ चुनावों में अभाविप का परचम	13
भारतीयता और आधुनिक चुनौतियां	15
फार्मा विजन-2012	18
कॉलेज भवन की खराब हालत के खिलाफ जम्मू में विरोध प्रदर्शन	20
भोपाल में आयोजित हुआ पूर्व कार्यकर्ता सम्मेलन	21
पंजाब प्रांत का 43वाँ अधिवेशन संपन्न	22
भ्रष्ट तंत्र का सहारा लेकर एनएसयूआई का डूसू पर कब्जा	23
परीक्षा नियमों में संशोधन की मांग को लेकर कृषि विश्वविद्यालय में सफल प्रदर्शन	24

वैधानिक सूचना

राष्ट्रीय छात्रशक्ति में प्रकाशित लेख एवं विचार तथा रचनाओं में व्यक्त दृष्टिकोण संबंधित लेखकों के हैं। संपादक, प्रकाशक एवं मुद्रक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। समस्त प्रकार के विवादों का न्यायिक क्षेत्र दिल्ली है।

संपादकीय

भ्रष्टाचार के खिलाफ नारेबाजी देश के ज्यादातर नागरिकों को अब खोखली लगने लगी है। अन्ना की टीम का बिखराव और उसमें से उपजा नया दल एक विद्रूप की तरह सामने आया है। आंदोलन का आकर्षण जब अपने चरम पर था और टोपी लगा कर हर कोई अपने आप को अन्ना बता रहा था, उस समय भी जिन लोगों ने भारत के समाज के मन को समझा है और आंदोलनों का इतिहास पढ़ा है, वे इस परिणति की उम्मीद कर रहे थे। लेकिन यह सब इतनी जल्दी बीत जायेगा, इसका अनुमान कम लोगों को था।

वास्तव में, इस समस्या की शुरुआत उस समझ से होती है जब कोई व्यक्ति या समूह यह विश्वास कर लेता है कि यह देश ''नेशन इन मेकिंग'' है। उसे लगता है कि यह एक कोरा कागज है जिस पर कोई भी अपनी मनचाही इबारत लिख सकता है। धूमकेतु की तरह अचानक प्रकट होकर आकाश पर छा जाने वाले हर समाज सुधारक की यह प्रबल इच्छा होती है कि अनंत में विलीन हो जाने से पहले वह इस पर अपने निशान छोड़ जाय। लेकिन ज्यादातर ऐसा नहीं होता।

इसलिये, जिन लोगों ने देश के अनादि-अनंत स्वरूप का साक्षात्कार किया, उन्होंने सैकड़ों हजारों वर्षों में संस्कार के साथ घुल गये जीवनमूल्यों को इस देश की जीवनीशक्ति का मूल स्त्रोत माना। इसी में से राष्ट्र की 'चिति' का भान होता है, 'विराट' की कल्पना उभरती है, 'व्यष्टि' और 'समष्टि' के रिश्तों की पहचान होती है और 'एकात्म-मानववाद' के रूप में उस भारतीय जीवन-दर्शन की युगानुकूल व्याख्या सामने आती है।

बीसवीं शती के ऋषितुल्य विचारक स्व. दीनदयाल उपाध्याय ने भारतीय वाङमय का अवगाहन कर उसका नवनीत एकात्म-मानववाद के रूप में प्रस्तुत किया। अपने चिंतनक्रम को पूर्णता तक पहुंचाने और उसे धरातल पर उतारने का अवकाश काल ने उन्हें नहीं दिया। किन्तु वे जाने से पहले उस मार्ग का इंगित अवश्य कर गये जिस पर चल कर भारत अपना उद्दिष्ट प्राप्त कर सकता है।

नारों और भावनाओं के उद्रेक से उपजे आंदोलनों का भी अपने आप में महत्व होता है। इसलिये अन्ना आंदोलन ने भी काल के कपाल पर छोटी ही सही, एक रेखा अवश्य खींच दी है। लेकिन उनके बाद आया बिखराव इस बात का संकेत है कि उसका दवाब हवा में बना और घुल गया किन्तु धरती से उसका रिश्ता नहीं जुड़ सका। धरती से रिश्ता तभी जुड़ सकेगा जब दीनदयाल जी की तरह उस 'चिति' की अनुभूति अपने अंतस् में हो सके। भावुक आंदोलन को यदि 'विराट' का बल भी मिल जाय तो देश का कायाकल्प होते देर नहीं लगेगी।

आज जिस चौराहे पर देश खड़ा दिखायी देता है उस पर सही दिशा का निर्देश पाने के लिये अनंत काल तक प्रतीक्षा की नहीं बल्कि उन पदचिन्हों की खोज की आवश्यकता है जिनका अनुगमन कर हम अपनी राष्ट्रीय आकांक्षाओं को पा सकें, साथ ही जिस लोकमंगल के अनुष्ठान का भार भारत पर है उसका आवाहन कर सकें।

स्व. दीनदयाल जी के चिंतन का युगानुकूल पुनर्पाठ रा.स्व.संघ के सरसंघचालक श्री मोहनराव भागवत द्वारा दिल्ली में आयोजित एक कार्यक्रम में किया गया जिसका विषय था ''भारतीयता और आधुनिक चुनौतियां''। पाठकों के अवगाहन के लिये उनके व्याख्यान के संपादित अंश इस अंक में प्रस्तुत हैं। पाक अधिक्रांत क्षेत्र को निगलने की पाकिस्तान की साजिश पर भी विशेष सामग्री देने का प्रयास किया गया है। अन्य सभी स्तंभ एवं समाचार आपके लिये उपयोगी सिद्ध होंगे, यह विश्वास है।

समस्त पाठक परिवार को विजयादशमी की हार्दिक शुभकामनाओं सहित।

■

केंद्र सरकार के घोटालों के खिलाफ देशभर में महाविद्यालय बंद एवं रास्ता रोको आन्दोलन

हजारों छात्र सड़क पर उतरे, कोयला खदान आवंटन तथा एअरपोर्ट भूमि आवंटन अनुबंध तत्काल करने की मांग

केंद्र की यूपीए सरकार द्वारा किये गए कोयला खदान आवंटन एवं एअरपोर्ट भूमि घोटालें के खिलाफ देशभर में महाविद्यालय बंद एवं रास्ता रोको आन्दोलन का आहवाहन 4 सितम्बर को किया गया। यूथ अगेंस्ट करप्शन एवं अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के आवाह्न पर आयोजित इस देशव्यापी आन्दोलन आन्दोलन में हजारों छात्र सड़क पर उतरे और केंद्र सरकार के खिलाफ अपनी नाराजगी व्यक्त की।

जयपुर में पुलिस का दमन चक्र चला जिसमें कार्यकर्ताओं को बेरहमी से पिटा गया। बिहार के कई स्थानों पर रेल रोकी गयी एवं चक्का जाम किये गए। मेरठ, उज्जैन, मंडला, उदयपुर, जोधपुर, बेंगलुरू, हैदराबाद, भोपाल, नागपुर, मुंबई, जयपुर, रायपुर में कार्यकर्ताओं व छात्रों पर पुलिस द्वारा लाठीचार्ज किया गया एवं गिरफ्तारी भी हुई। बाद में गिरफ्तार कार्यकर्ताओं के आक्रोश को देखते हुए सभी को रिहा भी कर दिया गया। केरल, गुजरात, झारखण्ड, उत्तरांचल, हिमाचल प्रदेश सहित सभी प्रदेशों में अधिकतम विश्वविद्यालय, महाविद्यालय बंद रहे एवं विद्यार्थियों ने बड़ी संख्या में आन्दोलन में सहभागी होकर भ्रष्टाचार के विरुद्ध आवाज बुलंद की।

कॉलेज बन्द के दौरान मैसूर में विरोध प्रदर्शन करती छात्राएं

देशव्यापी आन्दोलन पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए अभाविप के राष्ट्रीय महामंत्री श्री उमेश दत्त ने कहा कि देश में यूपीए के नेतृत्व वाली केंद्र सरकार ने अनगिनत घोटालें किये है। अब कोयला खदान आवंटन एवं एअरपोर्ट भूमि घोटाले

भ्रष्टाचार विरोध में कठुआ (जम्मू-कश्मीर) में रास्ता रोको करते छात्र

(बाएं) शुजालपुर (म.प्र.) में रास्ता रोको करते कार्यकर्त्ता तथा (दाएं) भोपाल में भ्रष्टाचार का विरोध करती छात्राएं

ने केंद्र सरकार के घोटालेबाज चरित्र को पुन: बेनकाब कर दिया है। इस घोटाले से स्वयंभू मिस्टर क्लीन कहे जाने वालें प्रधानमंत्री को अब पद पर रहने का कोई अधिकार नहीं है क्यूंकि उन्होंने इसकी गरिमा को कलंकित किया है। श्री उमेश दत्त ने प्रधानमंत्री के तत्काल इस्तीफे की भी मांग की।

बेंगलुरू में आयोजित प्रदर्शन को संबोधित करते हुए यूथ अगेंस्ट करप्शन के राष्ट्रीय सह संयोजक श्री एन रविकुमार ने कहा कि प्रधानमंत्री ने कोयला मंत्रालय का प्रभार रहते हुए लगभग 1 लाख 86 हजार करोड़ का घोटाला किया है, जिसने अभी तक हुए सभी घोटालों की हदें पर कर दी है। इस घोटालें ने देश की छवि को शर्मसार किया है।

भोपाल में प्रदर्शन को संबोधित करते हुए यूथ अगेंस्ट करप्शन के राष्ट्रीय सह संयोजक श्री विष्णुदत्त शर्मा ने कहा कि जिस प्रकार देश में प्रतिदिन नए घोटाले सामने आ रहे है एवं भ्रष्ट केंद्र सरकार के नुमाइन्दों ने देशभर में लुट मचा रखी है, उस स्थिति में भ्रष्टाचार की पराकाष्ठा को पार कर चुकी इस केंद्र सरकार के खिलाफ युवाओं व सामान्य जनता को भी सीधे संघर्ष करने के लिए सड़कों पर उतरना होगा, तभी इस भ्रष्टतम सरकार को सही सबक मिल पायेगा। नागपुर में प्रदर्शन के दौरान अभाविप के राष्ट्रीय मंत्री श्री सुरेन्द्र नाईक ने कहा कि कोयला खदान घोटाले में प्रधानमंत्री सीधे रूप से जिम्मेदार है तथा केंद्र सरकार सीबीआई जाँच करने का ढोंग पिट रही है, जो हास्यास्पद लग रहा है। जाँच का सही से हो पाना शंकास्पद है क्यूंकि सभी जानते है कि सीबीआई प्रधानमंत्री के सीधे नियंत्रण में है।

यूथ अगेंस्ट करप्शन के राष्ट्रीय संयोजक श्री सुनील बंसल ने कहा कि आज के महाविद्यालय बंद एवं रास्ता रोको आन्दोलन की सफलता ने यह दर्शा दिया है कि कोयला खदान आवंटन एवं एअरपोर्ट भूमि घोटाले के खिलाफ देश के युवाओं में भारी आक्रोश है तथा यह आक्रोश भ्रष्टाचारियों व घोटालेवाजों पर फूटने वाला है। भ्रष्ट केंद्र सरकार के विरुद्ध यूथ अगेंस्ट करप्शन का संघर्ष आगे भी जारी रहेगा और आन्दोलन के अगले चरण में यूथ अगेंस्ट करप्शन एवं अभाविप द्वारा केंद्र सरकार के भ्रष्ट मंत्रियों के खिलाफ सीधे संघर्ष का एलान किया जायेगा, जिसमे 7-8, सितम्बर को भ्रष्ट कैबिनेट मंत्री फ्रुल्ल पटेल के घर का घेराव उनके गृहनगर गोंदिया (महाराष्ट्र) में किया जायेगा।

इस घेराव मे हजारों छात्र शामिल होंगे जो मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ एवं विदर्भ से सटें सीमावर्ती जिलों के कार्यकर्त्ता पदयात्रा करते हुए गोंदिया पहुंचकर फ्रुल्ल पटेल के घर का घेराव करेंगे। उन्होंने केंद्र सरकार को चेतावनी देते हुई कहा कि कोयला खदान आवंटन तथा एअरपोर्ट भूमि आवंटन अनुबंध तत्काल सरकार रद्द करे, अन्यथा यूथ अगेंस्ट करप्शन द्वारा भ्रष्ट केन्द्रीय मंत्रियों के विरुद्ध सीधा संघर्ष और तीव्र होगा। ■

प्रफुल्ल पटेल के खिलाफ विरोध प्रदर्शन

अभाविप ने किया भ्रष्टाचार के विरूद्ध सीधा संघर्ष का आह्वान

■ अभिषेक रंजन

गोंदिया (महाराष्ट्र), 8 सितम्बर, 2012। देश में कोयला घोटालें व दिल्ली एयरपोर्ट भूमि घोटाले में शामिल रहे केन्द्रीय मंत्री प्रफुल्ल पटेल के खिलाफ गोंदिया में छात्र-युवाओं ने उग्र विरोध प्रदर्शन किया। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के नेतृत्व में भ्रष्टाचार में लिप्त मंत्री के खिलाफ आयोजित इस विरोध प्रदर्शन में 2000 हजार से ज्यादा छात्र गिरफ्तार हुए। पुलिस द्वारा किये बर्बर लाठीचार्ज में 'यूथ अगेंस्ट करप्शन' के राष्ट्रीय सह संयोजक विष्णुदत्त शर्मा सहित अनेक कार्यकर्ता विरोध-प्रदर्शन के दौरान घायल हुए, जिन्हें बाद में अस्पताल ले जाया गया।

इससे पहले विभिन्न समूहों में छात्र गोंदिया में श्री प्रफुल्ल पटेल का घेराव करने के लिए पहुंचे। मध्यप्रदेश के रजगांव से पदयात्रा करते हुये 'यूथ अगेंस्ट करप्शन' के राष्ट्रीय सह संयोजक श्री विष्णुदत्त शर्मा, अभाविप के प्रांत मंत्री श्री उपेन्द्र धाकड़, सुश्री अश्विनी परांजपे के नेतृत्व में लगभग 1000 से अधिक छात्र एवं युवा गोंदिया पहुँचे जहां उन्हें रोका गया, फिर बर्बरतापूर्वक लाठीचार्ज करते हुये गिरफ्तार कर पुलिस मुख्यालय ले जाया गया।

इसी प्रकार छत्तीसगढ़ से अभाविप के अखिल भारतीय जनजाति कार्य प्रमुख श्री प्रफुल्ल आकांत व अभाविप प्रांत मंत्री श्री राजू महंत के नेतृत्व में गोंदिया पहुँचे सैकड़ों

पदयात्रा निकालकर गोंदिया जा रहे मध्य प्रदेश के कार्यकर्ता

श्री विष्णुदत्त शर्मा ने कहा कि केंद्र सरकार के इशारे पर पुलिस के इस दमनकारी एवं अमानवीय लाठीचार्ज से देश का युवा डरने वाला नहीं है। जब तक कोयला घोटाले एवं दिल्ली एयरपोर्ट भूमि घोटाले में शामिल सभी भ्रष्टचारियों के विरूद्ध कारवाई नहीं होती तब तक विद्यार्थी परिषद् इसी तरह अपना विरोध दर्ज करवाती रहेगी। श्री शर्मा ने युवाओं का आह्वान करते हुये कहा की अब छात्रों व युवाओं को भ्रष्टाचार के विरूद्ध मौन तोड़कर सीधा संघर्ष करने हेतु हल्ला बोलना होगा, तभी देश में भ्रष्टाचारियों को सबक सिखाया जा सकेगा।

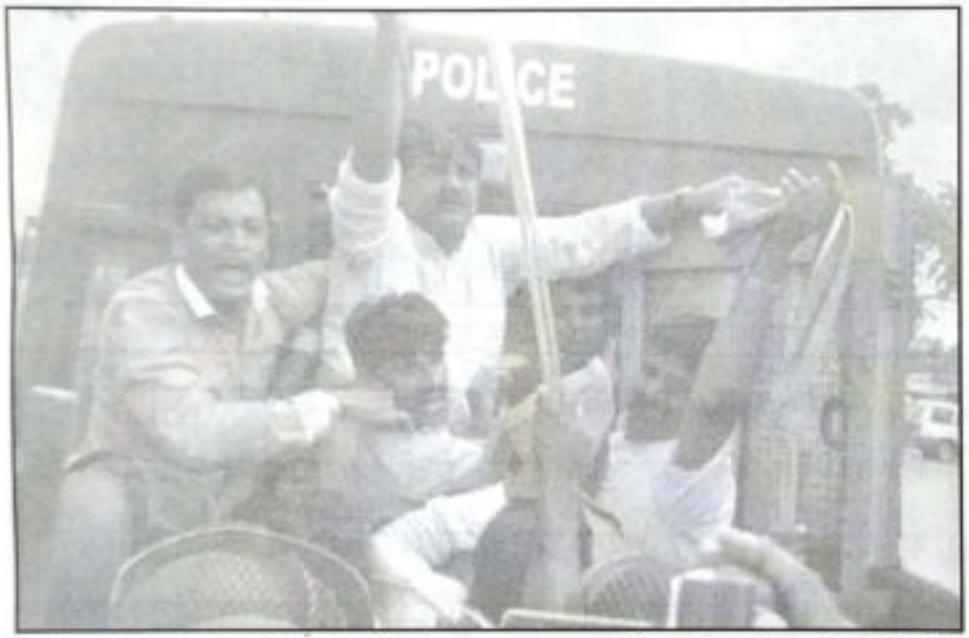

कार्यकर्ताओं को फूलसिंगरी चौराहे पर लाठीचार्ज करते हुये पुलिस ने गिरफ्तार किया।

विदर्भ प्रांत के छात्रों व युवाओं का समूह अभाविप के राष्ट्रीय मंत्री श्री सुरेन्द्र नाईक के नेतृत्व में गोंदिया पहुँचे जिन्हें रेलवे स्टेशन के पास ही पुलिस ने लाठीचार्ज कर गिरफ्तार कर लिया। पुलिस के इतने बड़े दमनचक्र के बाद भी 100 से अधिक छात्र व युवा कार्यकर्ता अभाविप के राष्ट्रीय मंत्री श्री रवि भगत, सुश्री कृति पटेल एवं अभाविप के पश्चिम क्षेत्र संगठन मंत्री श्री संजय पाचपोर के नेतृत्व में प्रफुल्ल पटेल के दफ्तर के सामने निर्धारित विरोध स्थल पर पहुँच गये जहां पर पुलिस ने सभी छात्रों व युवाओं पर अत्यंत अमानयवीय तरीके से लाठीचार्ज किया। दोपहर 12 से 2 बजे तक पुलिस व छात्रों की झड़पें चलती रही जिसमें कई छात्र व युवा कार्यकर्ता घायल हुये। इस विरोध प्रदर्शन में बड़ी संख्या में छात्राओं ने भी सहभाग किया, जिन पर बिना महिला पुलिस के लाठीचार्ज व अभद्रता की गई।

'यूथ अगेंस्ट करप्शन' के राष्ट्रीय सह संयोजक श्री विष्णुदत्त शर्मा ने प्रदर्शनकारी छात्रों को संबोधित करते कहा कि आज पुलिस भ्रष्टाचारियों पर कार्यवाही करने के स्थान पर उनकी सुरक्षा कर रही है तथा भ्रष्टाचार का विरोध करने वाले निर्दोष, छात्रों व युवाओं पर बेरहमी से लाठीचार्ज कर अत्याचार कर रही है। यह अत्यंत निंदनीय कृत्य है। पुलिस समाज विरोधियों एवं भ्रष्टाचारियों के खिलाफ कार्यवाही करने की बजाय दमनचक्र चलाकर भ्रष्टाचार के विरोध में उठने वाली आवाज को दबाने का प्रयास कर रही है। अगर पुलिस नें इतनी ताकत भ्रष्टाचारियों के खिलाफ लगाई होती तो आज हजारो छात्रों और युवाओं को सड़कों पर नहीं उतरना पड़ता। श्री शर्मा ने कहा कि केंद्र सरकार के इशारे पर पुलिस के इस दमनकारी एवं अमानवीय लाठीचार्ज से देश का युवा डरने वाला नहीं है। जब तक कोयला घोटाले एवं दिल्ली एयरपोर्ट भूमि घोटाले में शामिल सभी भ्रष्टचारियों के विरूद्ध कारवाई नहीं होती तब तक विद्यार्थी परिषद् इसी तरह अपना विरोध दर्ज करवाती रहेगी।

श्री विष्णुदत्त शर्मा ने युवाओं का आह्वान करते हुये कहा की अब छात्रों व युवाओं को भ्रष्टाचार के विरूद्ध मौन तोड़कर सीधा संघर्ष करने हेतु हल्ला बोलना होगा, तभी देश में भ्रष्टाचारियों को सबक सिखाया जा सकेगा। ■

जेएनयू में 'बीफ फेस्टीवल'

जेएनयू में फिर विफल हुआ सांस्कृतिक पहचान मिटाने का षड्यंत्र

■ डॉ. शिव शक्ति बक्सी

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में 'बीफ एंव पोर्क फेस्टीवल' मनाये जाने के समाचार से पूरा देश आहत हुआ। देश के कोने-कोने से इस पर तीखी प्रतिक्रिया आने लगी, परन्तु जे.एन.यू. प्रशासन मूक दर्शक बना रहा। अखिल विद्यार्थी परिषद के जे. एन.यू. विभाग के कार्यकर्ताओं ने जे.एन. यू. प्रशासन एवं पुलिस में भी लिखित शिकायत दर्ज करवाई, परन्तु कोई कार्रवाई नहीं हुई। एक विचित्र परिस्थिति पैदा हुई, स्पष्ट कानूनी प्रावधान के बावजूद ना तो जे.एन.यू. प्रशासन कुछ करना चाह रही थी ना ही पुलिस इस पर कोई कार्यवाई करना चा रही थी। इस विषय पर पूरे देश में वातावरण गरम होता रहा, जे.एन.यू. परिसर में माहौल खराब होता रहा और प्रशासन हाथ पर हाथ धरे बैठा रहा। आखिरकार दिल्ली उच्च न्यायालय ने हस्तक्षेप किया तथा प्रशासन को इस आयोजन पर कार्रवाई करने का निर्देश दिया। इस आयोजन के माध्यम से पूरे देश में अव्यवस्था एवं अशांति पैदा करने की साज़िश करने वालों के मंसूबों पर पानी फिर गया।

'बीफ एण्ड पोर्क फेस्टीवल' यानी 'गोमांस एवं सुअर मांस महोत्सव'- कितना बीभत्स एंव कितनी विकृत मानसिकता का प्रदर्शन। आज जब पूरा विश्व पर्यावरण और पशु- पक्षियों के लिए संवेदनशील दुनिया के निर्माण की कामना कर रहा है, यहां तक की पाश्चात्य देशों में भी 'पेटा' जैसे

> **'गाय' की रक्षा 'यूटिलिटेरियन' अवधारणा पर नहीं तो इस विषय में हमारा सीधा तर्क यह होना चाहिए कि 'गोमाता' हमारी सांस्कृतिक पहचान की द्योतक हैं, तथा इसकी रक्षा करना हमारा धर्म है। अपनी धर्म एंव संस्कृति के मान्यताओं के आधार पर हम ना गोहत्या के समर्थक हैं न ही 'गोमांस' का विक्रय सहन कर सकते हैं।**

आंदोलन खड़े हो रहे हैं, जे.एन.यू. में कुछ लोग 'गोमांस' की वकालत कर रहे हैं। और फिर 'गोमांस' के साथ सुअर मांस तो एक बहाना है- असल में निशाना गोमांस पर है। 'गोमांस' के माध्यम से भारत की सदियों पुरानी परंपराओं एंव मान्यताओं पर चोट करने की एक साज़िश है। इस आयोजन के पीछे खड़े लोगों को पता है की 'गोमांस' का नाम आते ही देशवासी भड़क उठेंगे, सांप्रदायिक सौहार्द बिगड़ेगा और पूरे देश में एक विषाक्त वातावरण का निर्माण होगा। ऐसे माहौल में ये लोग मनचाही राजनीतिक रोटियां सेंकना चाहते हैं।

अभी हाल में जब जे.एन.यू.के इस ताजा प्रकरण पर पूरे देश की प्रतिकिया आने लगी तब मुझे वे दिन याद आ गये जब जे.एन.यू. के एक कैंटिन में 'गोमांस' धड़ल्ले से बेचा जाता था। तभी मैं नया-नया जे.एन.यू. में आया था। एक दिन मेरे एक विदेशी मित्र ने कहा कि sss-2 कैंटिन में लंच लेने चलते हैं वहां गुरूवार को गोमांस मिलता है। मुझे एकाएक जबरदस्त झटका लगा। जे.एन.यू.में गोमांस मिलता है- मैं विश्वास ही नहीं कर पा रहा था। मैंने उसे बताया कि यहां 'गोमांस' का मिलना कानून के विरूद्ध है, यदि लोगों को पता चल जाए तो गजब हो जायेगा। देश के दूसरे भाग में तो ऐसा होने पर खून-खराबा तक हो सकता है। यह सन् 1999 के नवम्बर-दिसंबर की घटना है। विद्यार्थी परिषद के हम कुछ छात्रों ने इसका कड़ा विरोध किया। sss- 2 के फ्रांसिस कैंटिन के खिलाफ हमने शिकायत की तथा प्रदर्शन किया। इस समय पहली

बार हमने अपने आंखों से देखा बड़ी संख्या में एस.एफ.आई, ए.एस.एफ.आई, आइसा जैसे छात्र संगठनों के लोग हमारे प्रदर्शन के विरूद्ध इकट्ठे हो गये। हमारी संख्या कम थी परन्तु हमने हार नहीं मानी- दोनों तरफ से नारेबाजी, धक्का-मुक्की शुरू हो गयी - हाथा-पाई तक की नौबत आ गई। पूरे कैंपस में खबर आग की तरह फैल गई, हमारे पक्ष में छात्र इकट्ठे होने लगे। तत्कालीन डी.एस. डब्ल्यू. प्रो. कुरैशी घटनास्थल पर पहुंचे, छात्रों का गुस्सा देखकर उन्होंने कार्रवाई का आश्वासन दिया तथा 'गोमांस' का 'सैम्पल' लैब टेस्ट के लिए भेजा गया। परिणाम यह हुआ कि कैंटिन का लाइसेंस प्रशासन के द्वारा रद्द किया गया तथा कैंटिन मालिक को 'ब्लैक लिस्टेड' कर दिया गया। जे.एन.यू. में यह हमारे लिए बड़ी जीत थी।

जब हम कैम्पस में 'गोमांस' के विक्रय के विरूद्ध संघर्ष कर रहे थे तब वामपंथी छात्र संगठनों एंव विद्यार्थी परिषद के बीच इस मुद्दे पर एक व्यापक बहस भी शुरू हो गई। वामपंथी छात्र संगठन उस समय ठीक इसी प्रकार का तर्क दे रहे थे जैसा कि अब सुनने को मिल रहा है। 'गोमांस' का विरोध करने वाले 'ब्राह्मणवाद' के प्रवर्तक एवं समर्थक कहे जा रहे थे। 'हिन्दू फासिज्म' जैसी बेतुकी बात हो रही थी। इस दौरान हमारे तरफ से कुछ लोगों ने 'गाय' के आम जन- जीवन के महत्व तथा उसके आर्थिक उपयोगिता पर ज़ोर देने का प्रयास किया। मेरा व्यक्तिगत मत है कि इस तरह के तर्क हमारे आधार को कमजोर करते हैं। 'गाय' की रक्षा 'यूटिलिटेरियन' अवधारणा पर की जानी चाहिए, इससे भी मैं सहमत नहीं था। हम लोगों ने सीधा तर्क यह रखा कि 'गोमाता' हमारी सांस्कृतिक पहचान की द्योतक हैं, तथा इसकी रक्षा करना हमारा धर्म है। अपनी धर्म एंव संस्कृति के मान्यताओं के आधार पर हम ना गोहत्या के समर्थक हैं न ही 'गोमांस' का विक्रय सहन कर सकते हैं।

'गोमांस' की बात करने वाले लोगों के निशाने पर हमेशा से भारतीय सांस्कृतिक मान्यताएं एवं विश्वास रहे हैं। देश में कम्युनिस्ट लेखकों ने इसके पहले भी 'ब्राह्मण वैदिक काल में गोमांस खाते थे' जैसा मिथक प्रचारित करने का प्रयास किया परन्तु भारतीय सांस्कृतिक परम्पराओं एंव मान्यताओं पर रत्ती भर भी आंच नहीं आई। जे.एन.यू. के हाल के प्रकरण को इसी संदर्भ में देखा जा सकता है। इस बार यह भी तर्क दिया गया कि 'हमारे खाने के अधिकार' की रक्षा होनी चाहिए। इन लोगों से यह कहा जाना चाहिए की यदि आपको 'खाने का अधिकार' है तो 'पशु-पक्षियों' को जीने का भी अधिकार है। 'खाने का अधिकार' जैसा तर्क गढ़कर आप देश की भावनाओं एवं मान्यताओं से खिलवाड़ नहीं कर सकते। दूसरा तर्क यह भी दिया गया कि दलित लोग 'गोमांस' खाते हैं। ऐसे मिथक गढ़ने वालों में कांचा इल्लैया जैसे मिशनरी समर्थित स्वघोषित दलित विचारक भी हैं। इन्हें पता होना चाहिए कि 'दलित' शब्द इस देश में एक बहुत बड़े वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है जो 'गोमांस' नहीं खाते और गाय को माता मानकर पुजते हैं। कुछ एक समुदाय मरे पशु का मांस भक्षण करते भी थे तो मजबूरीवश, ना कि किसी मान्यता के कारण। इनकी स्थिति भी सुधरने के साथ अब वे ऐसी दुरूह स्थिति से बाहर निकल चुके हैं। पूरे 'दलित' समाज को गोमांस' भक्षण करने वाला दर्शाया जाना एक लंबे षड्यंत्र का अंग है जिसके अंतर्गत इन्हें व्यापक हिन्दू समाज से काटने का सपना कुछ लोग वर्षों से देखते आ रहे हैं।

'गोमांस महोत्सव' आयोजन जहां एक ओर भारतीय समाज को विभाजित एवं विखंडित करने की साजिश है वहीं दूसरी ओर भारतीय एवं पाश्चात्य परम्परा, वि[illegible], एवं दर्शन के बीच संघर्ष का परिणाम भी। जहां एक ओर पाश्चात्य का 'मानवतावाद'- 'पुरूष मानव' को सृष्टि का केन्द्र मानकर महिला समेत शेष समस्त सृष्टि पर इसके आधिपत्य का समर्थक है वहीं भारत की संस्कृति समस्त सृष्टि के परस्पर संबंधों, एक-दूसरे पर निर्भरता एवं इसके प्रत्येक इकाई की स्वतंत्रता, जीवंतता एवं स्वावलम्बन पर भी जोर देता है। पाश्चात्य परम्परा मानव द्वारा शेष सृष्टि के दोहन एवं उपभोग का समर्थक है जबकि भारतीय परम्पराओं में 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की अवधारणा में समस्त सृष्टि को समाहित किया गया है। इस कारण से हम आदिकाल से पशु, पक्षी, वनस्पति, पर्यावरण प्रकृति एवं पृथ्वी को पूजते आये हैं। 'गोमांस महोत्सव' एक बहाना है जिसके माध्यम से पाश्चात्य परम्पराएं भारतीय परम्पराओं पर आघात करना चाहती हैं। समय रहते ही दिल्ली उच्च न्यायालय ने इस पर रोक लगाकर एक सराहनीय कार्य किया है। इसके लिए वे बधाई के पात्र हैं।

(लेखक कमल संदेश में कार्यकारी सम्पादक हैं)

गिलगित-बाल्तिस्तान में पाकिस्तान का नया दांव

■ आशुतोष

पाकिस्तान ने गिलगित-बाल्तिस्तान को निगलने के लिये नया दांव चला है। वर्ष 2009 में पाकिस्तान की पहल पर गठित और उसके ही कठपुतली प्रतिनिधियों संचालित गिलगित- बाल्तिस्तान विधान सभा ने गत 13 सितम्बर को इस इलाके को पाकिस्तान के प्रांत का दर्जा दिये जाने का प्रस्ताव बहुमत से पारित कर दिया।

इन प्रतिनिधियों ने उम्मीद जतायी है कि इन्हें राज्य का दर्जा मिलने के बाद वे सभी अधिकार हासिल हो सकेंगे जो पाकिस्तान के नागरिकों को मिले हुए हैं। साथ ही, वे पाकिस्तान की नेशनल असेम्बली में अपना प्रतिनिधि भेज सकेंगे जो उनकी बात को वहां रखेगा। विदित हो कि गिलगित-बाल्तिस्तान जम्मू कश्मीर राज्य का वह भाग है जिस पर 1947 में आक्रमण कर पाकिस्तान ने अवैध कब्जा कर लिया था।

1947 में जम्मू कश्मीर के तत्कालीन महाराजा हरि सिंह ने अपने राज्य का भारत में विधिवत विलय किया था। भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम 1947 के अंतर्गत यह एक वैधानिक प्रावधान था जिसका पालन महाराजा ने किया तथा तत्कालीन गवर्नर जनरल माउंटबेटन ने इसे स्वीकार किया। यह निर्णय करने के एकमात्र अधिकारी यद्यपि महाराजा स्वयं थे किन्तु इसमें उनके धुर विरोधी तथा बाद में वहां के प्रधानमंत्री रहे शेख अब्दुल्ला की सहमति भी शामिल थी।

जम्मू कश्मीर के मामले में भारतीय नेतृत्व निरंतर गलतियां करता रहा है। इसकी कीमत न केवल राज्य की जनता ने चुकायी बल्कि देश भी चुका रहा है। पाकिस्तान के इस इलाके पर कब्जा करने के बाद से आज तक केवल प्राकृतिक संसाधनों की लूट ही पाक का उद्देश्य रहा है। इस क्षेत्र में से लगभग छः हजार किलोमीटर जमीन 1964 में उसने चीन को भेंट कर दी। अब गिलगित को भी पट्टे पर देने की बात चल रही है। चीन इस रास्ते से ग्वादर बंदरगाह तक पहुंच चुका है और भारत के लिये सामरिक और रणनीतिक चुनौती पेश कर रहा है।

जानकारी हो कि संयुक्त राष्ट्र द्वारा पाकिस्तान को बहुत पहले ही पाक अधिक्रांत क्षेत्र को खाली करने को कहा जा चुका है। भारत की संप्रभुता को चुनौती देते हुए चीन को वहां आमंत्रित करना निंदनीय और आपत्तिजनक है। पाक की नियत वहां पर मौजूद सोने, तांबे और यूरेनियम के अथाह भंडार पर है। तकनीकी और आर्थिक दृष्टि से कमजोर होने के कारण वह इस लूट में साझा करने के लिये चीन को आमंत्रित कर रहा है।

चीन इस मामले में उसका गुरू भी है। पाक इस क्षेत्र में वही सब हथकंडे दोहरा रहा है जो चीन दशकों से तिब्बत, पूर्वी तुर्किस्तान और इनर मंगोलिया में अपना रहा है। जिस तरह चीन तिब्बत में चीनी जनसंख्या को बसा कर मूल तिब्बतियों को जातीय तौर पर अल्पसंख्यक बना रहा है और जनसांख्यिक बदलाव के द्वारा वहां अपने विरोध को प्रभावहीन बना रहा है, वही पाकिस्तान गिलगित बाल्तिस्तान में पंजाबीभाषी मुस्लिम जनसंख्या को बसाने और वहां के व्यापार और नौकरियों में उनकी संख्या बढ़ा कर करना चाहता है।

पाकिस्तान की कुख्यात खुफिया एजेन्सी इस इलाके में आतंकवादियों के प्रशिक्षण कैंप चलाती है वहीं वह स्थानीय निवासियों को उनके कबीलाई रीति-रिवाजों और परम्पराओं को छोड़ कर उनके अरबीकरण में जुटी है। इसके लिये वह आतंकवादी गुटों का भी सहारा लेती है। इसका विरोध करने वाले स्थानीय नेताओं को राजद्रोह के आरोप में जेलों में ठूंस दिया जाता है और उत्पीड़न किया जाता है।

पाकिस्तान का सर्वोच्च न्यायालय अपने ऐतिहासिक निर्णय में 1994 में यह स्पष्ट कर चुका है कि गिलगित-बाल्तिस्तान पाकिस्तान का नहीं बल्कि जम्मू कश्मीर का हिस्सा है। इसके बावजूद भारत ने इस मुद्दे पर कठोरता से बात करने की जहमत नहीं उठाई। इससे पूर्व 29 अगस्त 2009 में पाकिस्तान ने गिलगित-बाल्तिस्तान में विधानसभा का गठन कराया तो भी भारत ने औपचारिक विरोध दर्ज करा कर अपने कर्तव्य की इतिश्री कर ली।

जिस इलाके को वहां का सर्वोच्च

न्यायालय ही देश का भाग स्वीकार नहीं करता और जो वैधानिक रूप से भारत का अभिन्न अंग है, उसमें पाकिस्तान द्वारा विधानसभा के गठन को जिस तीव्रता के साथ चुनौती दी जानी चाहिये थी उसके लिये इच्छाशक्ति के अभाव के साथ ही घोर लापरवाही का परिचय भारत की ओर से दिया गया। यही कारण है कि आज पाकिस्तान ने एक कदम आगे बढ़ कर उसे पूरे तौर पर निगल जाने की भूमिका बनानी शुरू कर दी है। खेद की बात है कि इस घटना के तीन सप्ताह बीत जाने के बाद भी भारत सरकार की ओर से कोई ठोस कदम उठाये जाने के संकेत नहीं मिले हैं। इस मुद्दे पर मीडिया की रहस्यमय चुप्पी भी आश्चर्यजनक है।

विधानसभा द्वारा पारित प्रस्ताव गिलगित-बाल्तिस्तान कौंसिल को भेजा गया है। इस कौंसिल के चेयरमैन स्वयं पाकिस्तान के प्रधानमंत्री हैं। कौंसिल द्वारा सहमति जताने पर यह प्रस्ताव पाकिस्तान की नेशनल असेंबली और सीनेट में रखा जायेगा। वहां से पारित होने के बाद वह पाकिस्तान में पूरी तरह शामिल मान लिया जायेगा। यह उल्लेखनीय है कि पाकिस्तान की दबंगई के बावजूद भी यह प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित नहीं हो सका। स्थानीय नागरिक भी इसके खिलाफ आवाज उठाने लगा हैं। लेकिन जिस भारत से उन्हें सबसे मजबूत समर्थन की उम्मीद है उसने ही खामोशी ओढ़ी हुई है।

जम्मू कश्मीर का मसला ऐसी फांस बन चुका है जिसे निकाले बिना सीमा पर शांति संभव नहीं। इसे निकालने में जितनी देर की जायेगी, पीड़ा उतनी ही अधिक बढ़ेगी। दुर्भाग्य यह है कि देश का नेतृत्व गत छः दशकों से इसे हल करने के बजाय टालने की नीति पर चल रहा है। इसके कारण भ्रम उत्पन्न हो रहे हैं, वैमनस्य बढ़ रहा है और विकास बाधित हो रहा है।

कोई भी देश, जो चारों तरफ से अपने शत्रुओं से घिरा हो, चार युद्ध लड़ चुका हो और हर समय संभावित युद्ध से आशंकित हो, दशकों से निरंतर छायायुद्ध झेल रहा हो, जिसकी सीमा के भीतर करोड़ों विदेशी घुसपैठिये हों जिनमें से अधिकांश शत्रुराष्ट्र के एजेंट की तरह काम कर रहे हों, कैसे विकास के बड़े-बड़े दावे कर सकता है।

दो अंकों की विकास दर, आर्थिक महाशक्ति बनने की ओर प्रस्थान, विदेशी निवेश का स्वर्ग जैसे आर्थिक मुहावरे मरीचिका बन कर तब तक छलते रहेंगे जब तक कि सीमा पर शांति तथा नागरिकों और निवेशकों के मन में भरोसा न स्थापित हो जाय। कश्मीर समस्या का हल न केवल भारत अपितु समूचे दक्षिण एशिया के विकास की जरूरी शर्त है।

जम्मू कश्मीर की जब बात की जाती है तो नियंत्रण रेखा के दोनों ओर के जम्मू कश्मीर का विचार करते हुए बात की जानी चाहिये। भारत, जो इस बात पर गर्व करता है कि वह दुनियां का सबसे बड़ा लोकतंत्र है, नियंत्रण रेखा के पार अपने ही नागरिकों पर होते अत्याचार और नस्लीय हमलों के प्रति आंख मूंद कर कब तक रह सकता है। क्या देश उस नैतिक जिम्मेदारी से हट सकता है जो राज्य के लोगों ने पाकिस्तान के आक्रमण के बावजूद भारत में विलय का समर्थन करके हमारे ऊपर डाली थी।

यह तथ्य है कि यदि कहीं कोई विरोध था भी तो वह राजशाही के खिलाफ था न कि भारत में विलय के खिलाफ। उस समय राज्य के मुस्लिमों का प्रतिनिधित्व करने वाले शेख अब्दुल्ला भारत में विलय के समर्थन में थे। कबायलियों के भेष में श्रीनगर की ओर बढ़ रही पाकिस्तानी सेना को रोकने के लिये तुरंत भारतीय सेना भेजी जाय, इसके लिये वे स्वयं श्री नेहरू के पास अनुरोध करने आये थे। महाराजा तो स्वयं ही भारत में विलय के प्रपत्र पर हस्ताक्षर कर चुके थे। फिर कौन था जो भारत में विलय के खिलाफ था और उसकी क्या अधिस्थिति (locus standi) थी।

यदि कोई इस तर्क से जरा भी सहमत है कि मीरपुर, मुजफ्फराबाद, कोटली या भिम्बर, जिसकी 90 प्रतिशत जनसंख्या को पाकिस्तानी आक्रमणकारियों ने मार डाला हो, उसकी शेष बची 10 प्रतिशत जनसंख्या पाकिस्तान में मिल जाने के लिये आतुर थी, निश्चित ही वह मूर्खों के स्वर्ग में रह रहा है। हमलावरों ने लूट, हत्या और बलात्कार करते समय केवल गैर-मुस्लिमों पर हमला किया था और मुस्लिमों को बख्श दिया गया था, ऐसा वर्णन कहीं नहीं मिलता।

ऐसी भी कोई जानकारी नहीं मिलती कि जिस इलाके पर पाकिस्तान ने कब्जा कर लिया वहां के निवासियों की बेहतरी के लिये उसने कुछ खास इंतजाम कर दिये हों। इन इलाकों के प्राकृतिक संसाधनों की बेतहाशा लूट के तो सबूत मिलते हैं लेकिन वहां आम आदमी की जिंदगी में आने वाली रोशनी की चर्चा सुनाई नहीं पड़ती। अब तो शायद इस्लामाबाद में भी ऐसे लोगों की बड़ी जनसंख्या हो जो पहला अवसर मिलते ही देश छोड़ कर जाने के लिये उतावले हों।

ऐसी स्थिति में भी भारत में ही एक

(शेष पृष्ठ 28 पर)

छात्र संघ चुनावों में अभाविप का परचम

उत्तराखंड: उत्तराखंड के विभिन्न महाविद्यालयों में संपन्न छात्र संघ चुनाव में 80 फीसदी जगहों पर विद्यार्थी परिषद के घोषित उम्मीदवारों ने जीत दर्ज की है। विद्यार्थी परिषद् ने सूबे के सबसे बड़े महाविद्यालय डी.ए.वी. पी.जी. कॉलेज, देहरादून, कुमाऊ के सबसे बड़े महाविद्यालय डी.बी.पी.जी. कॉलेज, हल्द्वानी, कुमाऊ विश्वविद्यालय नैनीताल परिसर, गढ़वाल केन्द्रीय विश्वविद्यालय, श्रीनगर परिसर, गढ़वाल केन्द्रीय विश्वविद्यालय छात्र संघ एवं रूद्रपुर, काशीपुर, बागेश्वर जैसे बड़े महाविद्यालयों सहित 40 महाविद्यालयों में अध्यक्ष समेत विभिन्न पदों में जीत दर्ज की है।

विद्यार्थी परिषद के प्रदेश मंत्री बृजेश बनकोटी ने कहा कि जिस प्रकार सरकार के दबाव में छात्र संघ चुनाव के दौरान विद्यार्थी परिषद कार्यकर्ताओं का उत्पीड़न हुआ तथा देहरादून एवं हल्द्वानी में पुलिस के माध्यम से कार्यालयों तक में लाठीचार्ज व तोड़फोड़ हुई, उससे आम छात्रों में एन.एस.यू.आई. और सत्तारूढ़ कांग्रेस का असली चेहरा बेनकाब हुआ है. सत्ता के नशे में चूर एन.एस.यू.आई. ने जिस तरह छात्र संघ चुनाव में अराजकता तथा गुंडागर्दी फैलाई, उसका जबाव उत्तरांचल के छात्रों ने विद्यार्थी परिषद को जीताकर दिया है। उन्होनें कहा कि विजयी छात्र संघों के माध्यम से महाविद्यालयों में शैक्षणिक वातावरण का सृजन होगा तथा कैम्पसों में रचनात्मक गतिविधियों को बढ़ाया जाएगा।

एमबी पीजी कॉलेज, हल्द्वानी के नवनिर्वाचित छात्र संघ अध्यक्ष विरेन्द्र सिंह बिष्ट एवं डीएवी पीजी कॉलेज के नवनिर्वाचित छात्र संघ अध्यक्ष महेश जगूड़ी ने कहा कि वे छात्र-छात्राओं की अपेक्षा में खरा उतरेंगें तथा महाविद्यालयों में सभी छात्रों को साथ लेकर अराजक तत्वों को बाहर कर स्वस्थ शैक्षणिक माहौल बनाने पर काम करेंगे।

देहरादून के डीएवी कॉलेज में अध्यक्ष पद पर जीते परिषद कार्यकर्त्ता महेश जगूड़ी

असम में हुए छात्र संघ चुनावों में अभाविप की भारी जीत

बांग्लादेश से सटी असम के सीमावर्ती शहर, करीमगंज के रवींद्र सदन गर्ल्स कॉलेज हुए छात्र संघ चुनाव में अभाविप को भारी जीत मिली है। 16 सितम्बर को घोषित चुनाव परिणामों में विद्यार्थी परिषद ने 17 सीटों पर हुए चुनाव में 16 सीटों पर अपनी धमाकेदार जीत की है वही दूसरी ओर एनएसयूआई के हिस्से में एक ही सीट आयी।

विदित हो कि असम के दक्षिणी भाग में स्थित इस कॉलेज में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद का लंबे समय से काम है तथा छात्र-हितों के लिए सदैव मुखर होकर काम करने के कारण इस कॉलेज में परिषद के उम्मीदवारों को भारी जीत मिली है।

अभाविप के विजयी उम्मीदवारों में उपाध्यक्ष पोपी मालाकार, सचिव अनामिका नाथ, संगीत और नाटक सहायक सचिव कबिता दास, खेल सचिव चयनिका बानिक, सहायक खेल सचिव रौशनी इशक, डिबेट सचिव नमिता दत्ता, सहायक सामाजिक कार्य सचिव सुष्मिता बानिक, पत्रिका सचिव पूजा सूत्रधार, कॉमन रूम

असम में छात्र संघ चुनाव जीते हुए अभाविप के कार्यकर्त्ता

सचिव अनामिका चक्रवर्ती, कॉमन रूम सह सचिव मधुमिता दास, समाज कार्य सचिव लक्ष्मी गोआला, पुस्तकालय सचिव दीपिका चंदा और सहायक सचिव अनामिका बिस्वास शामिल थे।

वहीं दूसरी ओर, असम के ही लामडिंग कॉलेज में हुए छात्र संघ चुनाव में भी विद्यार्थी परिषद का पूरा पैनल चुनाव जितने में सफल रहा। 29 सितम्बर को संपन्न चुनाव में अध्यक्ष पद पर बिस्वजीत मजुमदार, उपाध्यक्ष मोनोज नाथ, महासचिव सोमन पुल, सहसचिव प्रसंता मजुमदार, सांस्कृतिक और सामाजिक कार्य सचिव बिप्लोब कुमार डे, खेल सचिव प्रियदर्शी बर्धान, सह कहल सचिव पंकज सुक्लावैद्य, पत्रिका व साहित्यिक सचिव राजेश दास, लड़की एवं लड़कों के कॉमन रूम सचिव पद पर क्रमशः प्रियंका कुमारी सिंह व अनूप पॉल विजयी रहे।

असम के अन्य जगहों से प्राप्त जानकारी के मुताबिक, जोरहाट जिले के चिनामारा कॉलेज में हुए चुनाव में उपाध्यक्ष, सर्वोदय जुनियर एंड डिग्री कॉलेज में महासचिव, माजोली कॉलेज में सह सचिव, पत्रिका सचिव व वाद-विवाद सचिव, गुवाहाटी आर. जी. बरुआ कॉलेज में महासचिव के पद पर हुए चुनाव में परिषद उम्मीदवारों को जीत मिली तो बारपेटा जिले के बारपेटा सरकारी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में 3 पद, बोंगाईगाँव के बिरझारा गर्लस् कॉलेज के सभी 10 पद एवं दरांग जिले के देव मोनोई डिग्री कॉलेज में 4 पदों पर परिषद के घोषित प्रत्याशी जीतें।

असम में मिली जीत को कार्यकर्ताओं ने बांगलादेशी घुसपैठ के खिलाफ विद्यार्थी परिषद के लगातार संघर्ष का परिणाम बताया है। विदित हो कि छात्र हितों, विशेषकर उत्तर पूर्वी राज्यों के छात्रों के हि में पूरे देश में काम करने वाला संगठन विद्यार्थी परिषद प्रत्येक वर्ष अंतर राज्य छात्र जीवन दर्शन (SEIL) के माध्यम से वैचारिक और सांस्कृतिक एकता के लिए निरंतर प्रयासरत है। छात्र संघ चुनाव में मिली सफलता से यह जाहिर भी हुआ है कि अलगाववादी व देशविरोधी ताकतों को शैक्षणिक परिसरों से समाप्त करने के लिए उत्तर पूर्वी राज्यों के छात्र कमर कस चुके है। ■

देहरादून के डीएवी कॉलेज में रैली निकाल कर जीत का जश्न मनाते परिषद कार्यकर्त्ता

भारतीयता और आधुनिक चुनौतियां

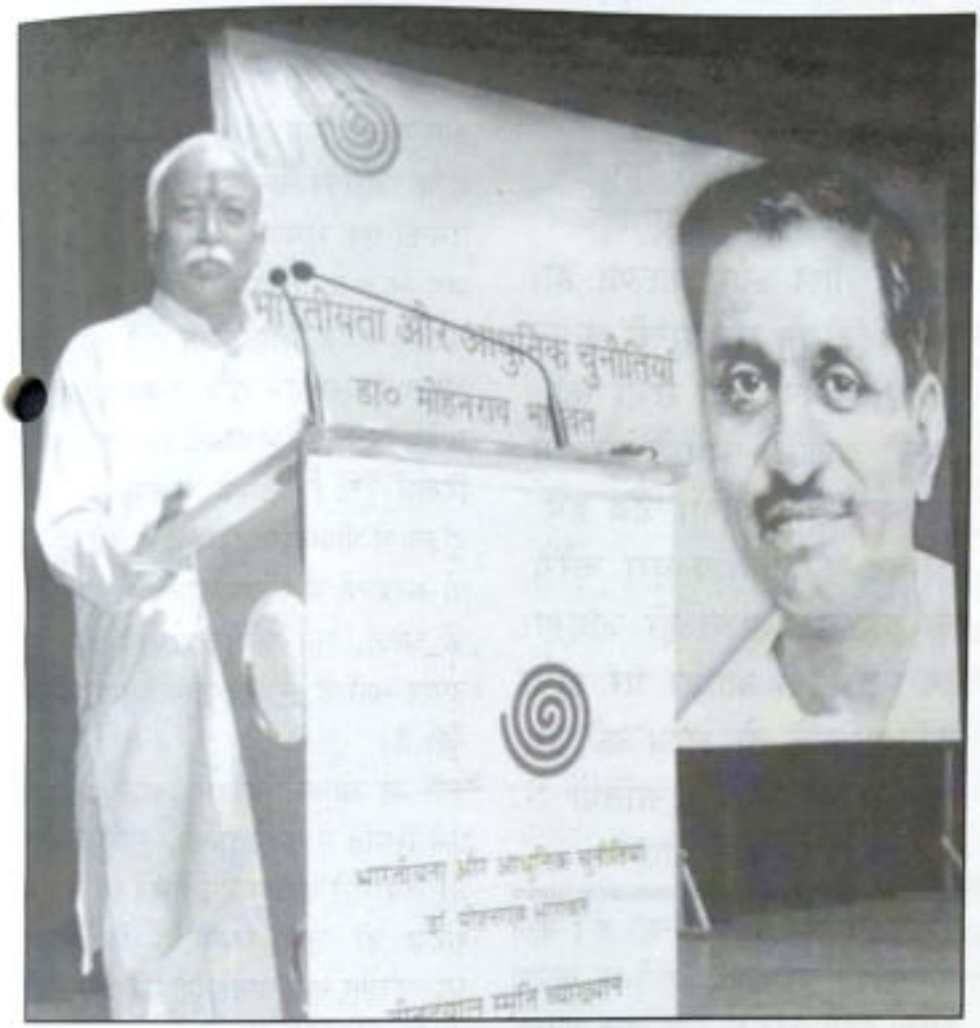

दीनदयाल शोध संस्थान एवं एकात्म मानव जीवन दर्शन विकास एवं अनुसंधान प्रतिष्ठान द्वारा आयोजित दीनदयाल स्मृति व्याख्यान में ''भारतीयता और आधुनिक चुनौतियां'' इस विषय पर दिनांक 3 अक्तूबर 2012 के दिल्ली में रा.स्व.संघ के सरसंघचालक पू. डॉ. मोहनराव भागवत के भाषण के संपादित अंश।

भारत की भारतीयता, हिन्दुत्व, सनातन धर्म की संस्कृति न केवल सनातन है बल्कि नूतन भी है। भारत दुनिया के नक्शे में एक है। कालान्तर में उसका आकार छोटा-बड़ा हो सकता है, लेकिन भारत के जनों का स्वभाव भारतीयता है। वो चलता आया है और चलता रहेगा। वो स्वभाव बना है जिस संस्कृति से, उस संस्कृति की सारी विशेषताएं, सारे मूल्य, भारत के सामान्य जनों के व्यक्तिगत और सामाजिक दोनों प्रकार के व्यवहार में आज भी देखने को मिलते है, अनुभव करने को मिलते हैं और इसलिए वह हमारा स्वभाव भी है, हमारी भारतीयता भी है।

दीनदयाल शोध संस्थान एवं एकात्म मानव जीवन दर्शन की ओर से नई दिल्ली में आयोजित एक व्याख्यान माला को संबोधित करते हुए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पू. सरसंघचालक डॉ. मोहनराव भागवत ने उक्त बातें कही।

बुद्धिजीवियों एवं गणमान्य नागरिकों से भरे फिक्की सभागार में भारतीयता एवं आधुनिक चुनौतियां विषय पर आयोजित इस व्याख्यान में भारतीयता और भारतीय संस्कृति के मूल्यों के आधार पर वर्तमान की चुनौतियों के समाधान का रास्ता सुझाते हुए डॉ. भागवत ने कहा कि भारत की भारतीयता की विशेषताओं के बारे में जो दुनिया जानती है वो सारी विशेषताएं हमारे सांस्कृतिक संस्कारों की देन हैं। उसके पीछे कुछ विचार हैं। वो विचार अभी भी वैसे ही हैं मानवतावादी। उस मानवतावादी दृष्टिकोण और आज की चुनौतियों के समाधान का आपसी सम्बन्ध है।

विश्व के समस्याओं के समाधान में एकात्म मानव दर्शन के प्रासंगिकता को इंगित करते हुए डॉ. भागवत ने कहा की कि लोग कहते है, अब ये दकियानूसी बातें छोड़ो, दुनिया बदल गई है। विज्ञान के कारण बहुत बड़ी क्रांति आई है, नया विचार करो। लेकिन जब हम दीनदयाल जी के एकात्म मानववाद को पढ़ते हैं, उसका चिंतन करते हैं तो ध्यान में आता है कि आज की चुनौतियों का सामना करने लायक अपने ही स्वभाव में इसके समाधाान के रूप दिखाई देते है। जीवन का हर क्षेत्र कैसा होगा, उसका चिंतन करते समय जब हम अपने मूल्यों से पूछते है तब जो बातें सामने आती है, उसको एकात्म मानव दर्शन कहा गया। उस एकात्म मानव दर्शन के आधार पर जीवन का एक नया रूप सामने आयेगा जो दुनिया के लिए एक उदाहरण बन सके।

अपने कालेज के दिनों को याद करते हुए डॉ. भागवत ने कहा कि मैं जब स्नातकोत्तर अभ्यास पाठयक्रम पूरा कर रहा था तो प्रतिवर्ष हमको चार बार अपने शास्त्रों के विषय पर व्याख्यान देने पड़ते थे। शास्त्र तो पुराने हैं, चिर-परिचित हैं, चले आ रहे हैं, सबको मालूम हैं। हमारे सारे विभागाध्यक्ष, प्राचार्य, डीन, फैकल्टी यानी जो लोग रहते हैं यूनिवर्सिटी में वो सब उसमें उपस्थित रहते थे, क्योंकि वो केवल व्याख्यान नहीं अपितु परीक्षा थी व्याख्यान देने वाले की। उसकी बहुत पहले से पूर्व तैयारी, मेहनत हम सब लोग करते थे। व्याख्यान भी देते थे, प्रश्नोत्तर भी होते थे। हमको सिखाने वाले हमसे पूछते थे। उसके उत्तर हमको देने पड़ते थे। कुछ ऐसी ही मनस्थिति यहां मेरे साथ है, लेकिन मेरे लिए राहत की

चुनौतियों के समाधान हेतु हमें अस्तित्व का भय छोड़ना चाहिए। सुख का स्वार्थ छोड़ अपने आपको शक्तिशाली बनाना चाहिए। लेकिन यह गुण तब माना जाएगा जब उसमें शील और करुणा हो। अपने जीवन को सुखी बनाते हुए, अपने साथ सभी को सुखी बनाओ। सबके सुख में अपना सुख मानो। जब हम जीवन का कर्तव्य पूरा करेंगे तो वह सुख प्राप्त हो जाएगा। इन मूल्यों के आधार पर अगर दुनिया चले तो आज की इस दुनिया की सारी चुनौतियों से मुक्ति मिल जाएगी।

बात है कि यहां प्रश्नोत्तर नहीं होने वाले और विषय सर्व विदित होने के कारण उसका मंडन करने के लिए बहुत अधिक बोलना नहीं पड़ेगा। लेकिन आज आवश्यकता मनन करने की है। उसे जीवन में उतारने की है।

डॉ. भागवत ने कहा कि जीवन चुनौतियों भरा ही होता है। अपने यहां अभिप्राय है कि केवल सत्युग में कोई चुनौतियां नहीं थीं । लेकिन बाकी दुनिया में तो जीवन कभी चुनौती रहित होगा इसकी मान्यता ही नहीं है। हम भारत के लोगों का जो जीवन 20 साल पहले था, आज उससे और अधिक चुनौतीपूर्ण हो गया है। अपना स्वयं का जीवन, स्वयं के परिवार का जीवन आज अधिक चुनौतीयुक्त बना है। देश का जीवन भी वैसे ही धीरे-धीरे चुनौतियों से घिरता चला जा रहा है। आज दुनिया के जीवन में भी वो सारे लक्षण दिखाई दे रहे हैं। सब ओर मनमुटाव, सब ओर कलह, सब ओर विनाश। लोग कहते हैं कि परिवर्तन आने वाला है और ये घटनायें उसकी एक सूचना है। परिवर्तन का समय जब आता है तो उसके पांच लक्षण बताये गए हैं। कहते हैं कि बहुत बड़ी प्राकृतिक आपदाएं आना शुरू होता है। कुल मिलाकर मानव के जीवन में मानवीयता का अभाव दिखाई देता है। उसके फलस्वरूप सारी दुनिया में भोगवादीता में वृद्धि होती है। लोगों के सम्बन्धों में खटास आती है और इसी के चलते, और कोई चारा नहीं है, कोई उपाय नहीं है, यह बदलेगा, ऐसा लगता नहीं है।

यह सोचकर आदमी निराश होता है। ऐसे स्थिति में हमारे सामने चुनौतियां बढ़ी हैं। जब ऐसे लक्षण हम देखते हैं तों हम सहज ही जान सकते हैं कि हमारे घर-परिवार की, हमारे देश की और सारी दुनिया की चुनौतियां बढी हैं और वो अनेक प्रकार की हैं। जिसका वर्णन एक-एक शीर्षक के अंतर्गत किया जा सकता है। ऐसे एक-एक शीर्षक तीन-तीन व्याख्यानों का विषय हो सकता है। लेकिन सारी चुनौतियों का चिंतन करके अगर किसी निष्कर्ष पर पहुंचना है तो क्या कहना पड़ेगा? चुनौतियां अलग-अलग नहीं हैं, उनका रूप अलग-अलग है। उनके क्षेत्र अलग-अलग हैं लेकिन उनका मूल एक ही जगह है और उस मूल को देखते हुए सम्पूर्ण दुनिया की चुनौतियों का वर्गीकरण हमने जब किया तो चार-पांच प्रकार सामने आते हैं। लेकिन

मूल में जो चुनौतियां है, उसके कारण ही बाकी सारी चुनौतियां पैदा हुई हैं।

वर्तमान समय की चुनौतियों को गिनाते हुए डॉ. भागवत ने कहा कि जो पहली बात ध्यान में आती है कि मनुष्य का ज्ञान बहुत बढ़ा है। विज्ञान ने जो विकास सौ साल में होता था, उसको एक दिन में करने की गति को साधा लिया है। विज्ञान के क्षेत्र में तो लोग कहते हैं कि आज मैं जो कहूंगा वो कल वैसा का वैसा रहेगा, इसको मैं बता नहीं सकता। वो रोज बदलता है। रोज नए-नए अनुसंधान होते रहते हैं। यहां तक विज्ञान की गति हो गई है कि आज तो मनुष्य जीवन का सृजन करने की आकांक्षा लेकर आगे बढ़ रहा है। भगवान का भी जो काम माना जाता था, आज उसे मनुष्य धीरे-धीरे अपने हाथ में लेने का प्रयास कर रहा है। ये ज्ञान तो बहुत बढ़ा है। लेकिन जो ये ज्ञान बढ़ रहा है, वह दोधारी तलवार है। उसका परिणाम क्या होगा, ये तो उसका उपयोग करने वाले पर निर्भर है। उपयोग करने वाले को कोई मर्यादा है तब ज्ञान का उपयोग अच्छा होता है। 'विज्ञान विवादाय, धनम् मदाय', विद्या, धन, शक्ति ये सारी बातें अच्छी हैं किन्तु दुष्ट हाथों में जब पड़ती हैं तो उसका उपयोग क्या करते हैं, हमने देखा ही है। एटम का अविष्कार करनेवालों ने कभी सोचा भी न होगा कि यह मानव के विध्वंस का कारण बनेगा। आज देख ही रहे है, कि किस प्रकार पूरे दुनिया में इसके जखीरे जमा हो रहे है।

विज्ञान में मूल्यों के समावेश की बात कहते हुए डॉ. भागवत ने कहा कि आज विज्ञान के क्षेत्र में वैज्ञानिकों में भी ये चर्चा का विषय बना है कि विज्ञान के मौलिक पर इथिक्स का बन्धन होना चाहिए कि नहीं होना चाहिए। निर्णय नहीं हुआ है। दोनों तरफ से बन्दूक है। ज्ञान पर मूल्यों का एथिक्स का बन्धन होना चाहिए, यह कहने वाले मनुष्य भी है। इसमें कोई आश्चर्य नहीं है। मनुष्य की मनुष्यता ही उसमें है। परन्तु उतने ही संख्याबल में, उतने ही गुण बल में, अच्छे-अच्छे समझदार लोग भी ये कहते हैं कि ये क्या फालतू बात है। ज्ञान तो एक संशोधन है। यह चलते रहता है, बढ़ते रहता है, उसको क्यों रोकना चाहिए। होंगे उसके कुछ नुकसान किन्तु उसके लाभ भी हैं। एक के विकास में दूसरे का विकास हो, विनाश न हो। यह होने के लिए मूल बात जो वास्तव में है वह हमारे हाथ में है। मनुष्य जीवन का उपयोग है परोपकार में, परमात्मा प्राप्त करने में, एक तत्व को साक्षात् करना। ऐसी स्थिति में कुछ पाना बाकी नहीं रहेगा। सुख शाश्वत, चिरंतन बना रहेगा। फिर विज्ञान के मायने बदल जायेंगे।

श्री भागवत ने कहा कि आज के समय में चुनौतियों के समाधान हेतु हमें अस्तित्व का भय छोड़ना चाहिए। सुख का स्वार्थ छोड़ अपने आपको शक्तिशाली बनाना चाहिए। लेकिन यह गुण तब माना जाएगा जब उसमें शील और करुणा हो। अपने जीवन को सुखी बनाते हुए, अपने साथ सभी को सुखी बनाओ। सबके सुख में अपना सुख मानो। जब हम जीवन का कर्तव्य पूरा करेंगे तो वह सुख प्राप्त हो जाएगा। इन मूल्यों के आधार पर अगर दुनिया चले तो आज की इस दुनिया की सारी चुनौतियों से मुक्ति मिल जाएगी। नहीं तो उपाय नहीं है। ये बात दुनिया के लोग मानते हैं, इसलिए भारत की ओर देखते हैं। यह बात हम इसलिए कहने में समर्थ हुए है कि इन बातों का हमारे यहां दशकों का, सदियों का, युगों का अनुभव है। आज भारत को केवल अतुल्य भारत 'इनक्रेडेबल इंडिया' ही नहीं विश्वसनीय भारत 'क्रेडेबल इंडिया' भी बनाना है।

कार्यक्रम के शुरुआत में विषय की प्रस्तावना डा. महेश चन्द्र शर्मा ने रखी। ■

प्रिय मित्रों,

शिक्षा क्षेत्र की प्रतिनिधि पत्रिका के रूप में **'राष्ट्रीय छात्रशक्ति'** का अक्तूबर अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है। इसमें विभिन्न समसामायिक घटनाक्रमों तथा भ्रष्टाचार से संबंधित महत्वपूर्ण आलेखों एवं खबरों का संकलन किया गया है। आशा है कि यह अंक आपकी आवश्यकताओं के अनुरूप उपादेय साबित होगा।

'राष्ट्रीय छात्रशक्ति' से संबंधित अपने सुझाव और विचार हमें नीचे दिए गए संपादकीय कार्यालय के पते अथवा ई-मेल पर अवश्य भेजें:-

''छात्रशक्ति भवन''

690, भूतल, गली नं. 21, फैज रोड, करोल बाग, नई दिल्ली-110005.

फोन: 011-43098248

ई-मेल: chhatrashakti.abvp@gmail.com

ब्लॉग: chhatrashaktiabvp.blogspot.com

फार्मा विजन-2012

तंत्र शिक्षण विद्यार्थी परिषद द्वारा वडोदरा में आयोजित दो दिवसीय संगोष्ठी

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद व्यावसायिक पाठयक्रमों में पढ़ने वालें छात्रों में तकनीकि कुशलता और ज्ञान प्रबोधन के लिए प्रत्येक क्षेत्र में काम कर रही है। समय समय पर कार्यक्रमों, संगोष्ठी के माध्यम से छात्रों की ऊर्जा को सकारात्मक दिशा देने का काम परिषद करती रहती है। एक ऐसा ही आयोजन परिषद् की तकनिकी छात्रों के लिए बनाये गये आयाम तंत्र शिक्षण विद्यार्थी परिषद (TSVP) द्वारा पिछले दिनों गुजरात के वड़ोदरा में आयोजित किया गया।

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद, गुजरात ने फार्मेसी व्यवसाय के छात्रों और संकायों के लिए दो दिवसीय की संगोष्ठी 'फार्मा विजन 2012' का आयोजन किया। 'भारतीय फार्मेसिस्ट : विरासत को हासिल करने की आवश्यकता' विषय पर आयोजित यह कार्यक्रम दिनांक 15-16, सितम्बर 2012, पायोनियर फार्मेसी डिग्री कॉलेज, वडोदरा में संपन्न हुआ।

उद्घाटन समारोह श्री जयनारायण व्यास (स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्री, गुजरात सरकार) और श्री सुनील आंबेकर (राष्ट्रीय संगठन मंत्री, अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद) के उपस्थिति में आयोजित किया गया। संगोष्ठी के संयोजक डॉ. डी. एम. पटेल ने उपस्थित मेहमानों और गणमान्य व्यक्तियों से परिचय

कार्यक्रम का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए

करवाया। कार्यक्रम में मेजबान संस्थान के प्रधानाचार्य डा. डी. बी. मेश्राम ने गर्मजोशी से प्रतिभागियों और गणमान्य व्यक्तियों का स्वागत किया। इस अवसर पर डा. मेश्राम ने ओम गायत्री शिक्षा और चैरिटेबल ट्रस्ट व पायोनियर फार्मेसी डिग्री कॉलेज का एक संक्षिप्त इतिहास प्रस्तुत किया और कार्यक्रम की सफलता के साथ-साथ भविष्य में भी ऐसे कार्यक्रमों के आयोजन हेतु हर सुविधा प्रदान करने की अपनी प्रतिबद्धता दोहरायी।

अभाविप के स्थापना व उसके संक्षिप्त इतिहास पर प्रकाश डालते हुए डॉ. शैलेश झाला, प्रदेश अध्यक्ष, अभाविप, गुजरात ने अपने संबोधन में संगोष्ठी के बारे में विस्तार से उपस्थित महानुभावों को जानकारी दी। डॉ. झाला ने फार्मा विजन जैसे कार्यक्रम और सेमिनारों के उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि चौतरफा व्यक्तित्व विकास और सफल व्यावसायिक, सामाजिक जीवन के लिए ऐसे कार्यक्रमों में छात्रों का भाग लेना आवश्यक हैं। उन्होंने छात्रों से व्यक्तिगत, सामाजिक और व्यावसायिक क्षेत्रों में विकास से देश के विकास का माध्यम बनने के लिए अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद का हिस्सा बनने का आग्रह किया।

फार्मा विजन-2012 के उद्घाटनकर्ता

श्री जयनारायण व्यास ने विद्यार्थी काल के अपने समय को याद करते हुए कहा कि विद्यार्थी जीवन से ही अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के साथ जुड़े रहने की वजह से मुझे यहाँ का माहौल घरेलू लग रहा है। भारत और दुनिया में औषधि क्षेत्र के वर्तमान परिदृश्य पर विचार व्यक्त करते हुए श्री व्यास ने कहा कि अनुसंधान, नवीन प्रौद्योगिकी और नवीनतम तकनीकों, विशेष रूप से छात्रें के लिए उपयोगी उपकरणों सहित कुछ क्षेत्रों में हमें और अधिक सुधार व प्रगति करनी चाहिए।

श्री दर्शन गुंजाल (प्रदेश मंत्री, अभाविप गुजरात) के आभार के साथ उद्घाटन समारोह संपन्न हुआ।

'फार्मेसी और युवाओं की भूमिका' विषय पर केन्द्रित पहले सत्र को संबोधित करते हुए श्री सुनील आंबेकर ने अपने विचार व्यक्त किये। उन्होंने छात्रों को प्रेरित करते हुए अपने देश के हित में और निकट भविष्य में एक सुपर पावर भारत बनाने के लिए अधिक से अधिक वैज्ञानिक और तकनीकी कौशल से काम करने की अपील की।

वैज्ञानिक सत्र में श्री विपुल पटेल, उपाध्यक्ष, एस्ट्रा लाइफ केयर प्रा. लिमिटेड ने फार्मेसी व्यवसाय की संरचना और पाठयक्रम पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि फार्मेसी का पाठयक्रम वैज्ञानिक और तकनीकी रूप से सही है, लेकिन जरूरत है छात्रों के द्वारा पाठयक्रम के प्रति सही धारणा अपनाने की!

रचनात्मकता और एक अच्छे सामाजिक संदेश के साथ शाम के सत्र में एक सांस्कृतिक कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया। कई नाटकों का भी मंचन 'पानी का रंग' सन्देश के अंतर्गत किया गया जो पानी बचाने, बेटी को बचाने के लिए, बेरोजगारी को कम करने और विभिन्न धर्मों के लोगों के बीच भाईचारे का विकास करने के सामाजिक संदेश समेटे था।

स्नातोकोत्तर और स्नातक कक्षा में पढ़ने वालें छात्रों के लिए 16 सितंबर को पोस्टर प्रतियोगिता, पांच सत्रों में प्रश्नोत्तरी और वक्तृत्व कला प्रतियोगिताएं आयोजित की गयी। दो दिन के इस कार्यक्रम में 529 छात्र शामिल हुए जिसमें से 314 छात्रों ने विभिन्न कार्यक्रमों में प्रतिभागी की हैसियत से भाग भी लिया।

समापन समारोह में प्रो. योगेश सिंह (कुलपति, एम. एस. विश्वविद्यालय, वडोदरा) ने भारत और विदेशों में दवा अनुसंधान पर प्रकाश डालते हुए इस क्षेत्र में सफलता के लिए तीन शब्दों जुनून, धैर्य और विफलता को पचाने में क्षमता को अपनाने की बात कही।

फार्मा विजन के संरक्षक डॉ. सी. एन. पटेल ने समापन भाषण दिया। डॉ. पटेल ने फार्मा युवाओं के लिए रचनात्मकता का संदेश देते हुए उन्होंने मजबूत और स्वस्थ राष्ट्र के निर्माण के लिए अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के साथ छात्रों को संबद्ध होने का आग्रह किया। ■

उद्घाटन कार्यक्रम में छात्रों को सम्बोधित करते हुए अभाविप के राष्ट्रीय संगठन मंत्री श्री सुनील आंबेकर

कॉलेज भवन की खराब हालत के खिलाफ जम्मू में विरोध प्रदर्शन

जम्मू। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) ने संगीत और ललित कला कॉलेज भवन की खराब हालत के खिलाफ तीव्र विरोध प्रदर्शन का किया। कॉलेज के सभी छात्रों ने कक्षाओं का बहिष्कार किया और विद्यार्थी परिषद के नेतृत्व में परिसर में इकट्ठे होकर प्रशासन के खिलाफ जोरदार नारेबाजी की और जुलूस की शक्ल में आधे घंटे के लिए तालाब तिल्लो सड़क को जाम किया।

इस अवसर पर सभा को संबोधित करते हुए प्रदेश मंत्री राघव शर्मा ने कहा कि खराब इमारत से कॉलेज के छात्रों के जीवन को खतरा हैं। 1905 में निर्मित भवन की अभी तक मरम्मत न होना प्रशासनिक उदासीनता और लापरवाही का नमूना है। राघव शर्मा ने कहा कि छात्रों के जीवन के साथ लापरवाही किसी भी सूरत में विद्यार्थी परिषद सहन नहीं करेगी।

गौरतलब है कि यह संस्थान जम्मू में संगीत और ललित कला का एकमात्र संस्थान है। श्री शर्मा ने कहा सरकार को इस संस्थान के लिए विशेष चिंता करनी चाहिए, लेकिन दुर्भाग्य है कि इस संस्थान को हमेशा सुविधाओं और विकास के मामले में उपेक्षित ही रहना पड़ा है। अगर दुर्घटनावश इमारत ढह जाती है और छात्रों को किसी भी प्रकार का शारीरिक नुकसान उठाना पड़ता है तो इसकी जिम्मेदारी कौन लेगा?

जब तक प्रशासन की तरफ से कोई सकारात्मक परिणाम नहीं मिलता है तब तक छात्रों ने कक्षाओं का बहिष्कार जारी रखने का फैसला किया।

अभाविप ने मांग की है कि कॉलेज को किसी अन्य स्थान पर स्थानांतरित कर दिया जाना चाहिए, क्योंकि इस ढहते इमारत से छात्रों के जीवन के लिए गंभीर खतरा उत्पन्न हो गया है। अगर मांगों पर ध्यान नहीं दिया गया तो अभाविप इस मुद्दे पर राज्यव्यापी आंदोलन करेगी। ■

भोपाल में आयोजित हुआ पूर्व कार्यकर्ता सम्मेलन

नि:शुल्क कोचिंग व इलेक्ट्रोनिक-पुस्तकालय का हुआ उद्घाटन

भोपाल। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद्, भोपाल द्वारा अपने प्रदेश कार्यालय 'छात्र शक्ति भवन' में पूर्व कार्यकर्ता सम्मेलन का आयोजन किया गया। सम्मेलन के दौरान मुख्य अतिथि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सह सरकार्यवाह श्री दत्तात्रेय होसबाले ने कार्यालय में संचालित होनेवाली नि:शुल्क पुस्तकालय का उद्घाटन भी किया।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि श्री दत्तात्रेय होसबाले ने कहा कि विगत 60 वर्षों से अभाविप के कार्यकर्ता राष्ट्रचिंतन में लीन होकर भारत के सम्पूर्ण विकास हेतु तत्पर है। हर्ष की बात है कि ये परंपरा अनवरत चली आ रही है। उन्होंने कहा कि अभाविप ने यह स्थापित किया है कि महाविद्यालय व विश्वविद्यालय में छात्रों द्वारा की जाने वाली गतिविधियां मात्र छात्र राजनीति नहीं अपितु छात्र गतिशीलता है। अभाविप हमेशा से ही विभिन्न प्रकार की गतिविधियां जैसे नि:शुल्क क्लास, नवीन छात्रों का सर्वे व उनकी समस्याओं के समाधान हेतु लड़ाई आदि करते आयी है। परिषद ने भ्रष्टाचार से लेकर शैक्षणिक परिसर में व्याप्त अनियमितताओं के खिलाफ संघर्ष कर उसको कर्मरूप से पराजित भी किया है। इसलिए अभाविप मात्र एक संगठन नहीं अपितु "अभाविप-एक जीवन दृष्टि" है जो व्यक्ति निर्माण के माध्यम से राष्ट्रीय पुनर्निर्माण के लिए अनवरत योगदान दे रहा है।

भोपाल में पूर्व कार्यकर्त्ताओं को सम्बोधित करते हुए रा.स्व.संघ के सह सरकार्यवाह श्री दत्तात्रेय होसबाले

केरल व आंध्रप्रदेश में कार्यकर्ताओं के बलिदान को याद करते हुए श्री होसबाले ने कहा कि हमारी परंपरा व कार्यपद्धति और अधिक दृढ़तापूर्वक कार्य इसलिए आगे बढ़ा है क्यूंकि हमने यह धारणा स्थापित है कि अभाविप ऐसा संगठन है जो राष्ट्रहित के किसी भी विषय से कभी समझौता नहीं करता। उन्होंने अभाविप की गौरवशाली परंपरा को आगे बढ़ाते हुए देश को पुन: विश्वगुरू बनाने के महान लक्ष्य हेतु कार्यकर्ताओं से कार्य करने को कहा।

इस अवसर पर अभाविप के क्षेत्रीय संगठन मंत्री श्री विष्णुदत्त शर्मा ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा है कि अभाविप का उद्देश्य है कि समाज के प्रत्येक क्षेत्र में मूल्यवान व देशभक्त नागरिक खड़े करना जो इस राष्ट्र को परम् वैभव पर लेकर जायें तथा मुझे अत्यधिक प्रसन्नता है कि हमारे कार्यकर्ता इस क्षेत्र में तेज गति से प्रगति कर रहे है। श्री विष्णुदत्त शर्मा ने अभाविप की ओर से वर्तमान कार्य की जानकारी देते हुए कहा है कि आज पूरे देश में अभाविप के 20 लाख से अधिक सदस्य है तथा कश्मीर से लेकर लेह-लद्दाख, अंडमान व लक्षद्वीप में भी अभाविप की इकाई पूरी शक्ति से देश के लिए खड़ी है। उन्होंने कहा है कि मुझे गर्व है कि अभाविप में कार्य किये कार्यकर्ता आज समाज के विभिन्न क्षेत्रों में जाकर समाज उत्थान के विभिन्न कार्यों के द्वारा राष्ट्रीय पुनर्निर्माण के कार्य में संलग्न है।

इस पूर्व कार्यकर्ता सम्मेलन के दौरान 70, 80, 90 के दशकों के कार्यकर्ताओं ने अपने अनुभवों को सभी के साथ बांटा।

साथ ही सभी ने वर्तमान पीढ़ी को अच्छे से कार्य करते हुए आगे बढ़ने हेतु शुभकामनाएं दी।

इस पूर्व कार्यकर्ता सम्मलेन का संचालन अभाविप के वरिष्ठ कार्यकर्ता श्री प्रसन्न शर्मा ने किया। सम्मेलन के अंत में भोपाल महानगर मंत्री श्री रितेश विरथरे ने सभी का आभार व्यक्त किया तथा महानगर अध्यक्ष श्री रोहित कुमार द्वारा सभी को स्मृति चिन्ह दिये गये। विद्यार्थी कल्याण न्यास द्वारा इस अवसर पर छात्राओं को पुस्तकें भी वितरित की गई।

विदित हो कि गरीब किन्तु प्रतिभावान छात्रों हेतु निर्मित इस नि:शुल्क पुस्तकालय को अभाविप के पूर्व क्षेत्रीय संगठन मंत्री स्व. श्री शालिग्राम तोमर के नाम से प्रारंभ किया गया है। वही छात्र शक्ति कार्यालय में ही नि:शुल्क एस्ससी कोचिंग व नि:शुल्क छात्र कोचिंग भी संचालित की जा रही है। ■

पंजाब प्रांत का 43वाँ अधिवेशन संपन्न

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् पंजाब प्रान्त का 43 वाँ प्रान्त अधिवेशन विगत 29-30 सितंबर को गुड़गाव में संपन्न हुआ। इस अधिवेशन में पंजाब के 23 जिलों से 215 कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

अधिवेशन के दौरान भ्रष्टाचार, सामाजिक अपराध, कन्या भ्रूण हत्या आदि विषयों को समेटे हुए पंजाब के वर्तमान परिदृश्य और वर्तमान शैक्षणिक स्थिति पर विस्तार से चर्चा कर प्रस्ताव भी पारित किये गए।

अधिवेशन में एकत्रित कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए क्षेत्रीय संगठन मंत्री श्री श्रीनिवास ने कहा कि वर्तमान समय में देश के सामने काफी चुनौतिया खड़ी है। ऐसे में भगत सिंह की बलिदानी परंपरा की मिसाल प्रस्तुत करने वाले पंजाब की धरती से देश आस लगाये हुए है। उन्होंने कार्यकर्ताओं से देश में व्याप्त समस्यायों के समाधान में अपनी सक्रिय भूमिका निभाने का आग्रह किया ।

पंजाब प्रान्त संगठन मंत्री सूरज भारद्वाज ने संगठनात्मक

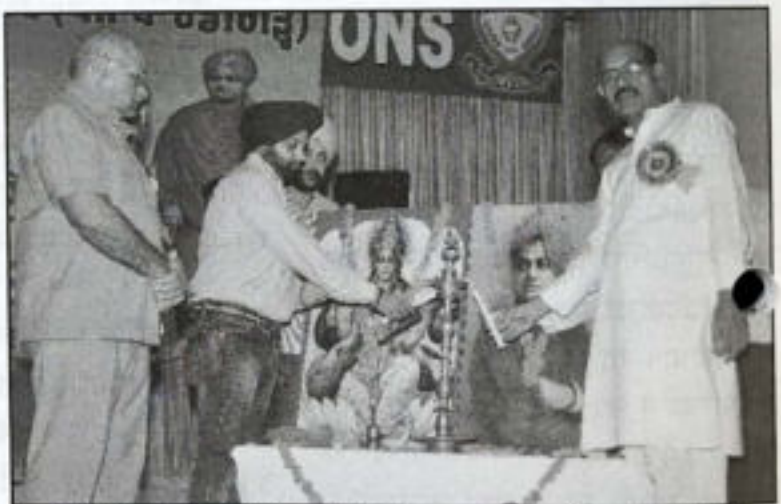

अधिवेशन का दीप प्रज्ज्वलन कर उद्घाटन करते हुए महानुभाव

विषयों को कार्यकर्ताओं के सम्मुख रखते हुए इस वर्ष 30 हजार सदस्यों को परिषद से जोड़ने की बात कही।

अधिवेशन में नए वर्ष के लिए अध्यक्ष के रूप में कृष्ण गोपाल एवं प्रदेश मंत्री के रूप में गुरविन्द्र सिंह के नाम की घोषणा चुनाव अधिकारी सुनील अचलेष राणा द्वारा की गयी। ■

भ्रष्ट तंत्र का सहारा लेकर एनएसयूआई का डूसू पर कब्जा

भ्रष्टाचार से रंगी हाथों से एनएसयूआई ने डूसू चुनावों में लोकतंत्र का मखौल उड़ाते हुए और भ्रष्ट तंत्र का सहारा लेकर इस बार डूसू पर कब्जा जमाने में सफल रही। कांग्रेस के राष्ट्रीय नेताओं की प्रत्यक्ष निगरानी और सक्रियता के बीच संपन्न हुए दिल्ली विश्वविद्यालय छात्र संघ (डूसू) चुनावों में नेशनल स्टूडेंट्स यूनियन ऑफ इंडिया (एनएसयूआई) के उम्मीदवार अध्यक्ष, उपाध्यक्ष व सचिव पद विजयी रहे वहीं सह सचिव का मुकाबला विद्यार्थी परिषद के साथ टाई रहा।

पुस्तकालय के अन्दर छात्र को दौड़ा कर बर्बरता पूर्वक पीटने वाली दिल्ली पुलिस

डूसू के घोषित अधिकारिक परिणामों के अनुसार एनएसयूआई के अरुण हुड्डा, एबीवीपी के अंकित धनंजय चौधरी को 5465 मतों से हराकर अध्यक्ष पद पर निर्वाचित हुए। अंकित धनंजय चौधरी के 12,156 मतों की तुलना में हुड्डा को 17,621 मत मिले। वहीं उपाध्यक्ष पद के लिए एनएसयूआई के वरुण खारी (17841) ने एबीवीपी उम्मीदवार गौरव चौधरी को (13373) मात दी। एनएसयूआई के ही [illegible]ण चौधरी ने (15605) एबीवीपी की रितु राणा (12,988 वोट) को हराया। संयुक्त सचिव पद पर एनएसयूआई की रवीना चौधरी और एबीवीपी के विशु बसोया को बराबर-बराबर 13164 वोट मिले।

सह सचिव पद के चुनाव में मुकाबला बराबरी पर छूटने पर बाद में विश्वविद्यालय ने एनएसयूआई की रवीना चौधरी और एबीवीपी के विशु बसोया के बीच फैसला लॉटरी द्वारा तय करने का फैसला किया। लेकिन जब परिणाम एबीवीपी के पक्ष में आए तो अपने फैसले को पलटाते हुए मुख्य चुनाव अधिकारी प्रो. सी. एस. दुबे द्वारा दोनों प्रत्याशियों को 6-6 महीने के लिए पद संभालने की सूचना निकाली गयी। गौर तलब है कि एबीवीपी प्रत्याशी विशु बसोया ने निर्वाचन अधिकारी को यह लिखकर देने के बाद भी कि चुनाव परिणाम के दिन लाठीचार्ज में घायल होने के कारण वह 20 तारीख को होनेवाले ड्रा में भाग नहीं लें सकता, विश्वविद्यालय प्रशासन ने ड्रा निकाला। ड्रा में जब विशु बसोया का नाम पहले निकला तो फिर से चुनाव अधिकारी ने कुलपति के निर्णय का हवाला देते हुए 6 महीने एनएसयूआई प्रत्याशी रवीना चौधरी को दे डाले। इस प्रकार से यहाँ भी एबीवीपी से पूरी जीत छीन ली गयी।

घोषित चुनाव परिणामों से असंतुष्ट परिषद् कार्यकर्ताओं ने जब पुनर्मतदान की मांग की तो मांग को अस्वीकार करते हुए मुख्य चुनाव अधिकारी प्रो. सी. एस. दुबे ने परिषद् कार्यकर्ताओं पर लाठिया चलवाई, जिसमें परिषद के वर्तमान प्रत्याशी, पिछले वर्ष जीते डूसू पदाधिकारी सहित दर्जन भर कार्यकर्ता गंभीर रूप से घायल हो गए। बाद में घायलों को नजदीक के अस्पताल में ले जाया गया। 2 कार्यकर्ताओं की स्थिति अत्यंत गंभीर होने पर एम्स में भर्ती करवाना पड़ा। बाद में विद्यार्थी परिषद ने लोकतान्त्रिक संस्था को बर्बाद करने के तरीकों के खिलाफ विश्वविद्यालय बंद का आवाहन किया, जिसमें स्वत: स्फूर्त तरीके से कॉलेज बंद रहे।

विदित हो कि पिछले साल हुए डूसू चुनाव में केवल अध्यक्ष पद की सीट ही एनएसयूआई ने जीती थी जबकि 2010 में संपन्न चुनाव में एनएसयूआई को केवल सह-सचिव पद पर संतोष करना पड़ा था।

डूसू परिणामों पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए प्रदेश मंत्री रोहित चहल ने कहा की, डूसू में लोकतंत्र बहाली का

परीक्षा नियमों में संशोधन की मांग को लेकर कृषि विश्वविद्यालय में सफल प्रदर्शन

रायपुर। परीक्षा नियमों में बदलाव को लेकर अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के सैकड़ों कार्यकर्ताओं ने इंदिरा गाँधी कृषि विश्वविद्यालय में 17 सितम्बर को जोरदार प्रदर्शन किया व कुलपति का घेराव कर समस्याओं के समाधान हेतु जल्द करवाई करने की मांग की। बाद में प्रदर्शनकारी छात्र नेताओं की विश्वविद्यालय संगोष्ठी कक्ष में कुलपति डॉ. एस. के. पाटिल की अध्यक्षता में एक बैठक हुई, जिसमें छात्र नेता नियमों में बदलाव की मांग को लेकर अड़े रहे। चर्चा में ग्रेस अंक के बुनियादी व

कृषि विश्वविद्यालय में प्रदर्शन करते अभाविप कार्यकर्त्ता

कुलपति ने मानी मांगे, 5 अंक ग्रेस पर बनी सहमति

सार्थक समाधान पर सहमति बन गई, जिसमें आंदोलित नेताओं को कुलपति ने आश्वासन दिया है कि उक्त प्रावधान इसी सत्र से परीक्षा प्रणाली में शामिल किए जाने का प्रयास किया जाएगा।

गौरतलब है कि इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय में स्नातक स्तर के पाठयक्रम में अध्ययनरत् विद्यार्थियों में ज्यादातर विद्यार्थीयों को 1 विषय में अनुत्तीर्ण होने के चलते पाठयक्रम के तृतीय व चतुर्थ वर्ष में प्रवेश से रोक दिया गया है। इससे छात्र-छात्राओं के भविष्य पर एक प्रश्नचिन्ह खड़ा हो गया है। इसी से परेशान होकर प्रदेश के विभिन्न निजी व शासकीय कृषि महाविद्यालय के छात्र-छात्राएं अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के नेतृत्व में प्रदर्शन करने विश्वविद्यालय पहुंचे।

छात्र नेताओं से कुलपति डॉ. एस. के. पाटिल की बैठक हुई जिसमें नियमों के बदलाव की जगह कुलपति पाटिल ने फेल हुए विषय में अधिकतम 5 अंक ग्रेस की प्रणाली पर सहमति दे दी। यह पूरे डिग्री के दौरान एक बार प्रदान किया जाएगा। कुलपति ने इस प्रावधान को इसी सत्र से प्रभावी बनाए जाने पर सहमति दी।

विद्यार्थी परिषद् के नेतृत्व में हुए इस आन्दोलन की सफलता से छात्र-छात्राओं में हर्ष का माहौल है।

हम सदैव स्वागत करते है क्यूंकि छात्र हित हमारे लिए हमेशा से सर्वोपरी रहा है। लेकिन डीयू प्रशासन बार-बार डूसू चुनाव में पारदर्शिता का हवाला देकर धांधली करता आ रहा है और इस बार धांधली की सारी सीमाएं तोड़ते हुए एनएसयूआई को जिताने में लगी रही। डीयू प्रशासन की इस छात्र विरोधी नीति का हम पुरजोर विरोध करते है।

विद्यार्थी परिषद ने निहत्थे कार्यकर्ताओं पर बर्बर लाठीचार्ज करने के आरोपी पुलिसकर्मी व लाठीचार्ज करवाने में शामिल प्रो. सी.एस. दुबे का नाम एफआइआर दर्ज कर उस पर कानूनी कारवाई करने की मांग की है। डूसू चुनाव में हुई धांधली के खिलाफ परिषद द्वारा न्यायलय में अपील भी की गयी है।

डूसू चुनाव परिणामों से एक बात तय हो गयी है कि भ्रष्टाचार के कालिख में पुती कांग्रेस देश के युवाओं के अपने साथ होने के दावे कर उन्हें दिग्भ्रमित करने के लिए सारे हथकंडे अपनाने में सफल रही, लेकिन देश की छात्रशक्ति असली चेहरे को बेनकाब करना जानती है। विद्यार्थी परिषद ने कांग्रेस व एनएसयूआई के शैक्षणिक परिसरों में अलोकतांत्रिक व्यवहार और छात्र राजनीति को समाप्त करने की हर साजिश का हमेशा प्रतिकार किया है एवं आनेवाले समय में भी छात्र राजनीति की शुचिता कायम करने के लिए संघर्षरत रहेगी। ■

श्रद्धांजलि

कुपहल्ली सीतारमैया सुदर्शन जी का जन्म 18 जून 1931, आषाढ़ शुक्ल द्वितीया, रायपुर (छत्तीसगढ़) में हुआ, दमोह मध्यप्रदेश में स्वयंसेवक बने। उनकी शिक्षा बी.ई. (ऑनर्स) दूरसंचार (टेलीकम्युनिकेशन) में 1953 में जबलपुर में हुई। शिक्षा पूरी होने के पश्चात् 23 दिसम्बर 1953 को जबलपुर से प्रचारक निकले। उन्होंने 1989 से 2000 तक सहसरकार्यवाह, 2000 से 21 मार्च 2009 तक सरसंघचालक के दायित्व का निर्वाह किया।

दिनांक 15 सितम्बर, 2012 को उनका दुखद निधन हुआ। राष्ट्रीय छात्र शक्ति तथा अभाविप परिवार की ओर से उन्हें विनम्र श्रद्धांजलि।

गिलगित-बाल्तिस्तान में पाकिस्तान का नया दांव

(पृष्ठ 12 का शेष)

तबका है जो मीरपुर, मुजफ्फराबाद, गिलगित और बाल्तिस्तान ही नहीं जम्मू कश्मीर और लद्दाख को भी भारत से अलग करने की वकालत करता है। अगर मीरवायज, गिलानी, यासीन मलिक और शब्बीर शाह को पाकिस्तान में बेहतर जिंदगी की उम्मीद होती तो वे कबके वहां जाकर अपना आशियाना बना चुके होते। लेकिन उन्हें यह पता है कि यहां रहते हुए यहां के शासन की आलोचना करना, रोज-रोज आंदोलन और बंद करके नागरिकों का जीना दूभर कर देना और फिर भी सारी दुनियां में घूम-घूम कर अपनी ही सरकार की आलोचना करने की आजादी सिर्फ भारत में ही मिल सकती है, पाकिस्तान में नहीं।

क्या भारत सरकार और जम्मू कश्मीर सरकार को यह पता नहीं है कि इन मुट्ठी भर अलगाववादियों के पीछे किसका समर्थन है। क्या उनकी हौंसलाअफजाई करने वाले भूषणों और अरुंधतियों के आर्थिक स्त्रोतों की जांच कराना असंभव है। क्या अफजल गुरू और कसाब को दावतें खिलाते रहने से कश्मीर समस्या हल हो जायेगी। और क्या कल फिर कोई विमान अपहरण कर भारत सरकार से इन हत्यारों की रिहाई की मांग नहीं करेगा।

प्रश्न यह भी उठता है कि क्या भारत सरकार नियंत्रण रेखा के उस पार के जम्मू कश्मीर को भी अपना मानती है। क्या वहां के नागरिकों की समस्याओं को उसने हल करने की कोई पहल की है। मीरपुर, मुजफ्फराबाद, भिम्बर, कोटली, नीलम घाटी, शारदा घाटी, गिलगित, बाल्तिस्तान, हुंजा - नगर, खापलू और स्कर्दू, दायमर और घेजर, गौरीकोट और आलियाबाद सहित अनेक नगरों - गांवों के नागरिक भारत के वैधानिक नागरिक हैं और उनके मानवाधिकारों की रक्षा और भारत के संविधान के अनुसार उनके मूल अधिकार सुनिश्चित करना भारत सरकार की जिम्मेदारी है।

भारत के अंदर जब तिब्बत की निर्वासित सरकार चुनी जा सकती है तो पाक अधिक्रांत क्षेत्र के लोगों को जम्मू कश्मीर विधान सभा और भारत की लोकसभा में प्रतिनिधित्व क्यों नहीं दिया जा सकता। यदि पाक ने उस क्षेत्र पर अवैध कब्जा नहीं किया होता तो भी तो वे अपने प्रतिनिधियों को चुनकर श्रीनगर अथवा दिल्ली ही भेजते।

टीका लगवाने और कर्ज लेने से लेकर भारत निर्माण तक के अल्पसंख्यकों के जिस हक का राग चैनलों पर दिन भर गूंज रहा है, उसी अल्पसंख्यक समुदाय के 70 लाख से ज्यादा भारतीय नागरिक नियंत्रण रेखा के उस पार अंधेरे में जीने को अभिशप्त हैं। मुस्लिम मतों की राजनीति और ठेकेदारी करने वाले भी उनकी बेहाली की ओर से आंखें मूंद लेते हैं।

हालात उनके भी उतने ही बदतर हैं जो 1947 में अपनी जान बचा कर भारत में प्रवेश करने में सफल रहे। पाक अधिक्रांत क्षेत्र से विस्थापित होकर भारत में शरण लेने वाले लोगों की जनसंख्या आज 10 लाख से ज्यादा हो चुकी है। स्वतंत्र भारत की सरकार आज तक उनके पुनर्वास की कोई योजना बनाना तो दूर, उनका पंजीकरण भी नहीं कर सकी है। इन 65 वर्षों में उनकी तीन पीढीयां बीत चुकी हैं और चौथी पीढ़ी बुढ़ापे की ओर बढ़ रही है।

चीन द्वारा तिब्बत पर कब्जा करने के बाद 1959 में दलाई लामा और उनके सहयोगियों को तिब्बत से भागना पड़ा। भारत ने उनको शरण दी। हिमाचल प्रदेश में धार्मशाला नामक स्थान पर उनका निवास है। वहीं से सेन्ट्रल तिबेतन एडमिनिस्ट्रेशन का संचालन होता है। वहीं पर निर्वासित तिब्बत सरकार का मुख्यालय है। लगभग 1 लाख निर्वासित तिब्बती मिलकर अपने प्रतिनिधि चुनते हैं जो सरकार बनाते हैं।

भारत के अंदर जब तिब्बत की निर्वासित सरकार चुनी जा सकती है तो पाक अधिक्रांत क्षेत्र के लोगों को जम्मू कश्मीर विधान सभा और भारत की लोकसभा में प्रतिनिधित्व क्यों नहीं दिया जा सकता। यदि पाक ने उस क्षेत्र पर अवैध कब्जा नहीं किया होता तो भी तो वे अपने प्रतिनिधियों को चुनकर श्रीनगर अथवा दिल्ली ही भेजते। पाक के अवैध कब्जे को आधार बना कर भारत में रह रहे वहां के नागरिकों को उनके लोकतांत्रिक अधिकार से वंचित रखना लोकतांत्रिक अवधारणा के विरुद्ध है। शुतुरमुर्ग की तरह रेत में सिर घुसा कर खतरा न-होने की कल्पना कर लेने का जोखिम देश के लिये मंहगा साबित हो रहा है। जरूरत दल और सत्ता की राजनीति से ऊपर उठ कर सोचने और व्यवहार करने की है। ■

सांची बौद्ध एवं भारतीय ज्ञान अध्ययन
विश्वविद्यालय के शिलान्यास समारोह में
मध्यप्रदेश आगमन पर
श्रीलंका के राष्ट्रपति
महामहिम श्री महिंदा राजपक्ष
और सभी अतिथियों का

हार्दिक स्वागत

शिवराज सिंह चौहान
मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश

जनसम्पर्क मध्यप्रदेश द्वारा जारी

सांची बौद्ध एवं भारतीय ज्ञान अध्ययन
विश्वविद्यालय के शिलान्यास समारोह में
मध्यप्रदेश आगमन पर
भूटान के प्रधानमंत्री
माननीय श्री जिग्मि योज़र थिनले
और सभी अतिथियों का

हार्दिक स्वागत

शिवराज सिंह चौहान
मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश

D-72495

जनसम्पर्क मध्यप्रदेश द्वारा जारी

RNI No. 32464/78

Con. No. - DL(N).249/10-12

देश विरोधी ताकतों के खिलाफ केरल में जनजाग्रति यात्रा

शैक्षणिक परिसरों में बढ़ते इस्लामी आतंकवाद व सांप्रदायिकरण के विरोध में अभाविप केरल इकाई ने जनजाग्रत यात्रा प्रारंभ ही है। पोपुलर फ्रंट ऑफ इण्डिया (PFI) और कैम्पस फ्रंट जैसे आतंकी संगठन पर प्रतिबंध लगाने की मांग से लेकर 1 अक्तूबर को तिरुवनंतपुरम से शुरू हुई। यात्रा का उद्घाटन विवेकानन्द केन्द्र के अध्यक्ष प्रा. पी. परमेश्वरन ने किया। यह यात्रा केरल के सभी कॉलेजों में जाएगी। इसका समापन 12 अक्तूबर को कन्नूर में होगा।

विदित हो की केरल के कॉलजों में लगातार हिंसा की घटनाएं हो रही हैं। अभाविप के दो कार्यकर्त्ता विशाल और सचिन की हत्या पिछले दिनों जिहादी गुण्डों से संघर्ष के दौरान कर दी गई। यह अब स्पष्ट हो गया है कि दोनों की हत्या के पीछे पी. एफ.आई. तथा कैम्पस फ्रंट के ही लोग थे। इससे पहले भी इन देश विरोधी संगठनों ने राष्ट्रवादी कार्यकर्त्ताओं पर लगातार हमले किए हैं। अभाविप राज्य तथा केन्द्र सरकार से मांग करती है दोषियों को जल्द से जल्द सजा दे व इन दोनों संगठनों पर तुरन्त प्रतिबंध लगाएं। केरल विद्यार्थी परिषद के प्रदेश मंत्री श्री अनीश ने बताया देश विरोधी ताकतों के खिलाफ हम अपना संघर्ष जारी रखेंगे भले ही इसकी कीमत हमें कार्यकर्त्ताओं की शहादत से चुकानी पड़े।